Chap-1

अध्याय - एक

आख्यानक प्रयोग की परम्परा ।

पौराणिक आख्यानों की प्रासांगिकता ।

पुराण - कथा स्रोत की प्रासंगिक प्रस्तुतियाँ, विविध आयाम ।

अध्याय- एक

संसार में प्रायः अधिकांश भाषाओं का साहित्य कविता की सांगीतिक स्वर लहरियों में निबंधित होकर ही सामने आया है, इसे लोक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में परखा जा सकता है । हिन्दी का प्रारम्भिक साहित्य भी इसके लोक गीतों में ही मुखरित होकर पल्लवित हुआ है । इन लोक गीतों में काव्य - विषय सांस्कृतिक एवं पौराणिक सन्दर्भों से ग्रहण किया गया, हिन्दी में मिथकीय प्रयोगों की सद्प्रेरणा का यही सार्थक स्त्रोत रहा है ।

संस्कृत साहित्य का अधिकांश सृजन इसी पौराणिक कथा प्रसंगों पर आधारित है, हिन्दी में काव्य - विषय वस्तु के रूप में इस पौराणिक कथा संसर्ग को निम्नांकित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

1. लोक विश्रुत कथाएँ
2. पौराणिक कथाएँ
3. ऐतिहासिक गाथाएँ

इनमें काव्यानुरूप सम्पूर्ण अथवा आंशिक कथाओं को ग्रहण किया गया है, कथा की कथांशों में भी पात्र विशेष की गाथा या परिवार विशेष का इतिवृत्त काव्यांकित किया गया था । इस प्रकार चरित्रांकन की स्वस्थ परम्परा भी इसी मिथकीय प्रयोग से ग्रहण की गई ।

चरित्रांकन की इस वृत्तगाथा को भी निम्न वर्गों में विभाजित कर सकते हैं ।

1. सम्पूर्ण जीवन वृत्त ।
2. आंशिक घटना दिनांक का वर्णन ।
3. उसका मानसिक द्वन्द्व ।
4. किसी विशेष समस्या को लेकर कथांश ।
5. मौलिक परिवर्तन के साथ मूढ़ कथांश ।

सम्पूर्ण जीवन वृत्त के रूप में भी :- मुक्तक छन्द और प्रबन्ध काव्य दोनों तरह की रचना हुई ।

.....2/-

मुक्तक काव्य सूर-सागर की पद(साहित्य/को तथा भक्ति काल के सम्पूर्ण स्फुट मुक्तक काव्य(साहित्य)को उल्लिखित किया जा सकता है ।

प्रबन्धात्मक स्वरूप में " राम चरित मानस " जैसी कृति का उल्लेख औचित्यपूर्ण है ।

आंशिक घटना विशेष का वर्णन भी " धनुष यज्ञ " दान लीला, माखन चोरी लीला, आदि प्रबन्धात्मक कविताओं में देखा जा सकता है । बाद की कविताओं में कवि जगदीश गुप्त का "शम्बूक " धर्मवीर भारती का " अन्धा युग " नरेश मेहता का " महा प्रस्थान ","संशय की एक रात" कविवर " दिनकर " का " रश्मि बंध " आदि रचनाओं को सामने रखा जा सकता है । इस संदर्भ में महाभारत के कुछ विशिष्ट पात्रों से जुड़ी घटनाओं को लेकर ही काव्य सृजित किये गये, कुछ रचनाओं का आधार वेद एवं पुराणों से सीधी ग्रहण की गई, इसमें मैथिली शरण का "द्वापर" हरिऔध का "प्रिय प्रवास" दिनकर की "उर्वशी" जय शंकर प्रसाद की "कामायनी" आदि रचनाओं के अन्दर देखा जा सकता है ।

मानसिक द्वन्द्व का चरित्रांकन नयी कविता की सही पहचान बनकर उभरा इसमें " संशय की एक रात " "राम की शक्ति पूजा""अन्धायुग" जैसी कृतियों को उद्धृत किया जा सकता है ।

किसी विशेष समस्या को लेकर लिखे गये, काव्य रूप में "वासुजी वरण जिसमें मद्यपान - निषेध को लेकर शुक्राचार्य " की पुत्री देवयानी की गाथा है, और मद्यपान करने वाले शुक्राचार्य की नियति को स्थापित किया गया है । " साकेत " में उर्मिला प्रसंग में नारी संचेतना की आवाज को उभारा गया है ।

कहीं - कहीं समर्थ कवियों ने कवि धैर्य के विशेषाधिकारों का प्रयोग करते हुए मूल पौराणिक कथांशों में सोद्देश्य परिवर्तन भी किये हैं । इनमें छायावादी एवं प्रयोगवादी कविताओं की काव्य कृत्तियों का उल्लेख किया जा सकता है ।

भारतीय मानस में कवियों का समाज के परिप्रेक्ष्य में कुछ भी कथ्य उसकी जीवन संवेदनाओं के साथ व्यक्त हुआ है, पुरानी व्यवस्थाओं का आधुनिक युग में परिमार्जित स्वरूप जब सामने आया तब उसके मूल अंशों को भी विस्मित न करने की एक परम्परा सी चल पड़ी थी, मध्ययुग में सामन्तवाद के पतन के साथ

......3/-

हिन्दू धर्म के पंडितों तथा आचार्यों ने इस्लाम की ओर से आयी चुनौती के आतंक में जिस एक बात पर सर्वथा बल दिया, वह थी पुरानी व्यवस्था को सही सिद्ध करने के लिए शास्त्रों और प्राचीन धर्मग्रन्थों की नयी व्याख्या । §1§

इसी नयी व्याख्या के आग्रह ने कविता में मिथक की भूमिका को अग्रसर किया ।

इस देश में विदेशियों के आगमन के साथ पौराणिक संस्कृति एवं मूल्यों में बदलाव आ गया था । वैसे तो पौराणिक जीवन में भी संघर्ष रहे हैं, या तो पराक्रम के लिए या मानव संरक्षण के लिए उन संघर्षों का वातावरण समुद्रों की क्षुब्ध तरंगों की भाँति ऊपर ही ऊपर दोलायमान होता रहा है, भीतर का जीवन अपनी स्वाभाविक गति से संस्मरण करता रहा है, किन्तु तूफान की भाँति विदेशियों का आगमन जनसमुद्र के वाह्य वातावरण में ही नहीं सबमेरीन की तरह आंतरिक सतह में भी हलचल मचा गया । §2§
और इसी हलचल ने कवि के परम्परागत सोंच में एक बदलाव ला दिया, इसी बदलाव ने कविता में मिथक को भी आग्रह पूर्वक ग्रहण किया ।

आलोच्य काल की कविता का एक बड़ा अंश आख्यान प्रधान है । आदर्श अथवा यथार्थ चरित्रों की अवतारणा के लिए ही प्रधानतया कवि आख्यान का अवलम्ब लेता है । वर्णनात्मक कविता का यह श्रेष्ठ रूप है । रामायण और महाभारत काव्य होकर भी धार्मिक पवित्रता के साथ प्रतिष्ठित हैं, क्यों कि इनमें दिव्य पुरूषों §राम-कृष्ण§ के चरित चित्रित हैं । इस काल में जो राम और कृष्ण से संबंधित आख्यान काव्य लिखे गये उनमें राम और कृष्ण को जाति या मानवता के सर्वोच्च प्रतीक के रूप में कलपित किया गया है । §3§

अतीत की गौरव-निधि से अपने चरित्र निर्माण और तद्नुसार राष्ट्र-निर्माण करने की प्रेरणा इस काल के मनीषी और विचारक लेखक और समालोचक युग के कवियों को देते रहे हैं और कवि अपने आख्यानों द्वारा उनका पदार्थ - पाठ जनता को देते रहे हैं । §4§

---

1. भक्ति काव्य और लोक जीवन डॉ0 शिव कुमार मिश्र पृ0-5
   प्रकाशक :- पिपुल लेटरेसी दिल्ली ।
2. युग और साहित्य , श्री शांतिप्रिय द्विवेदी पृ0-54
3. हिन्दी कविता में युगान्तर प्रो0 सुधीन्द्र पृ0- 165
4. वही - पृ0- 166

इस काल के मन्त्रा-दृष्टा आचार्य द्विवेदी के एक लेख में हिन्दी के वर्तमान कवियों को प्रेरणा दी ।

" भारत में अनन्त आदर्श नरेश, देशभक्त, वीर शिरोमणि और महात्मा हो गये हैं । हिन्दी के सुकवि यदि उन पर काव्य करें तो बहुत लाभ हो । " पलाशीर " युद्ध वृत्र संहार," मेघनाद - वध" और "यशवन्त राव महाकाव्य " की बराबरी का एक भी काव्य हिन्दी में नहीं, वर्तमान कवियों को इस तरह के काव्य लिखकर हिन्दी की श्रीवृद्धि करनी चाहिए ।" §1§

कवि श्रीधर पाठक ने पाँचवें हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद से अभिभाषण करते हुए कहा था :-

" अपने इतिहास पुराणों का मन्थन करके जो - जो हमारे जातीय बलवर्द्धक उपयुक्त प्रसंग मिलें उनके आधार पर उत्कृष्ट काव्य प्रस्तुत करने से क्या हमारी वर्तमान स्थिति में सुधार और उन्नति में विपुल सहाय मिलने की संभावना नहीं है । इसी प्रकार का सहाय दूसरे सभ्य देशों के साहित्य से अनुवाद द्वारा मिल सकता है, इसमें भी हमें सहयोग होना चाहिए ।" §2§

श्री सियाराम शरण गुप्त का "मौर्य विजय" इसमें कवि ने प्रसिद्ध भारतीय ऐतिहासिक वीर चन्द्रगुप्त मौर्य की गाथा गाई है । एक उद्धरण दृष्टव्य है :-

जग में अब भी गूँज रहे हैं गीत हमारे,
शौर्य - वीर्य गुण हुए न अब भी हम से न्यारे ।
रोम - मिश्र चीनादि काँपते रहते सारे,
यूनानी तो अभी - अभी हमसे हैं हारे ।
सब हमें जानते हैं सदा भारतीय हम हैं अभय,
फिर एक बार हे विश्व । तुम गाओ भारत की विजय । §3§

---

1. हिन्दी की वर्तमान अवस्था - सरस्वती, अक्टूबर- 1911
2. हिन्दी कविता में युगान्तर प्रो० सुधीन्द्र पृ०- 182
3. हिन्दी कविता में युगान्तर प्रो० सुधीन्द्र- पृ० 183

काव्य कला की दृष्टि से "मौर्य - विजय" देश प्रेम और देशाभिमान ने उदात्त भावों से उच्छ्वासित है । देश को विपज्जाल से मुक्त करने की प्रेरणा उसमें युग की भावना की छाया के रूप में आई हैं, उत्साह का परिपाक उसमें वीर रस की अवस्थिति कर सका है । राष्ट्र का पद दलित दर्प, उसमें अर्जित रूप में फुंकार कर उठा है । §1§

" प्रसिद्ध अंग्रेजी समालोचक हडसन के मतानुसार आख्यानक नीति भी एकपद्यबद्ध कहानी है, इसमें युद्ध वीरता, और पराक्रम के नृत्यों का प्राधान्य रहता है, और प्रेम, घृणा, करूणा इत्यादि जीवन के सरलतम अभिन्न भाव इसे प्रेरणा शक्ति प्रदान करते - इसकी शैली बहुत ही सरल और स्पष्ट होती है ।"§2§

मैथिली शरण गुप्त के "गुरू कुल" को कुछ दूर तक आख्यानक गीति संकलन माना जाता है, इसमें सिक्खों के गुरूवंश से संबंधित अनेक गीतियाँ संकलित है, इसमें आख्यान का संस्पर्श है । §3§

पुराणों में देवताओं के विषय में दी गई कथायें लोक रूचि के अनुरूप मनोरंजक हो, अधिक से अधिक लोग उन्हे पढ़े तथा अपने धर्म को पहचानें, पुराणों में धर्म की भावना को जागृत करने की क्षमता है, देवी देवताओं की अलौकिक - शक्तियों तथा उनके कार्य-व्यापारों का चित्रण मिथकों में सुरक्षित है । मिथक का सम्बन्ध धर्म से उस प्राचीन रूप से होता है जहाँ देवी देवताओं की उत्पत्ति चरित्र, कार्य, व्यापार, तथा उनके परिवेश के सम्बन्ध में आख्यान-उपाख्यान प्रस्तुत किये जाते हैं । "मिथक साहित्य में शक्ति के सभी प्रकारों का सुन्दर अंकलन मिलता है । " भारतीय मिथक संसार के बेजोड़ साहित्य में बेजोड़ स्थान रखते हैं xxx पुराणों का नाम इतिहास पुराण जैसे समस्त पद में वेदों में आया है । xxx अनेक पौराणिक कथायें भी वेदों में आयी हैं, जिनको मिथक कहा जा सकता है । " §4)

---

1. हिन्दी कविता में युगान्तर- प्रो0 सुधीन्द्र, पृ0- 183
2. आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास डॉ0 श्रीकृष्ण लाल- पृ0- 98
3. आधुनिक हिन्दी काव्य रूप और संरचना डॉ0 निर्मला जैन, पृ0 294
4. मिथक और भाषा - प्रो0 कन्हैया लाल लोढ़ा - पृ0 25

ॠग्वेद में बार-बार जिस देवासुर संग्राम की कथा आई है, वह कभी ऐतिहासिक सत्य रहा होगा, जो मौखिक परम्परा में आगे चलकर एक पौराणिक मिथक बना । वस्तुतः भावों की गहनता की अभिव्यक्ति के लिए भाषा सशक्त माध्यम है, इस असमर्थता को बिम्बों व प्रतीकों के माध्यम से दूर किया जा सकता है । अतः मिथक कथायें दर्शन, भक्ति, अध्यात्म आदि के क्षेत्र में प्रतीक व विम्ब का कार्य करती रहती है ।

मिथक मनुष्य के पूर्वजों की जीवन-यात्रा की गाथा है । मैरीलीच का कहना है कि मिथक वह कथा है जो किसी युग में घटी हुई हो, इन कथाओं में अनेक देश के धार्मिक विश्वास प्राचीन काल के वीरों, देवी - देवताओं, जनता की अलौकिक तथा अद्भुत परम्पराओं तथा सृष्टि रचना का वर्णन होता है । §1§

डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार जो ऊपर से झूठ है, और गहराई में सत्य हो, उसे मिथक कहते हैं । वह जाति दरिद्र होगी जिसके पास पुरा कथा नहीं ।" §2§

मिथक में किसी देवी-देवता का वृत्त अवश्य जुड़ा रहता है, मिथक से भारत का धर्मगाथा शब्द भी जुड़ा हुआ है। मिथक का एक समतुल्य कथा रूप लोक गाथा या लोक कथा का है । §3§

मिथक मनुष्य के इतिहास के जानने का सबल माध्यम है । इतिहास तथा मिथक का सम्बन्ध भूतकाल से है । दोनों का विषय लोकवृत्त रहता है । प्राचीन भारत में इन दोनों को समानार्थक स्वीकार किया गया है । "पुराण-साहित्य एक समय में ऐतिहासिक वाङ्‌मय था, तथा इतिहास और पुराण समार्नाथक थे । §4§

---

1. डिक्शनरी ऑव फोक लोर मेरी लीच, द्वितीय अंक, पृ0"778
2. मिथक उद्भव और विकास - डॉ0 उषापुरी विद्यावाचस्पति,पृ0 8
3. मिथक और भाषा - प्रो0 कन्हैया लाललोढ़ा- पृ0 30
4. पुराण इतिहास - श्री वेंकटेश्वर, समाचार अंक-22,10-1959

आख्यानक प्रयोग की परम्परा :-

आख्यान या उपन्यास हिन्दी साहित्य के लिए नई वस्तु है, परन्तु प्राचीन समय से ही अन्य विषयक काव्यों के साथ-साथ आख्यानक काव्य भी पाये जाते हैं, इतना अवश्य है कि उनकी संख्या अन्य विषयक - काव्यों की अपेक्षा न्यून है । विशेष राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के कारण हमारे साहित्य के प्रारम्भिक काल में वीर - गाथाओं की प्रधानता और मध्यकाल में धार्मिक ग्रन्थों की प्रचुरता रही, इसी मध्यकाल में हमारा साहित्य परिपक्व हुआ। और इसी काल में आख्यानक काव्य भी अपनी प्रौढ़ता के पास पहुँचा, इसी काल में आख्यान के अद्वितीय कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने बोल चाल की अवधी में, " पद्मावत " नामक सुन्दर आख्यान लिखा, वर्तमान युग परिवर्तन का युग है । इस युग में हम आख्यानक काव्य के स्थान में उपन्यासों और आख्यायिकाओं का उद्भव देख रहे हैं । काव्य अब छन्दोबद्ध न रहकर बोलचाल की गद्यमय सरल श्रृंखला पहन रहा है, यह गद्य का युग है, इस युग में हम आख्यान का परिवर्तित रूप उपन्यासों और आख्यायिकाओं में देख सकते हैं । {1}

आख्यानों की रचना बहुत पहले ही आरम्भ हो चुकी थी जैसा कि अन्य देशों में देखा जाता है, आख्यान पहले पहल प्रचलित दन्त कथाओं के आधार पर खड़ा होता है, ये दन्त कथायें कुछ अंशों में - ऐतिहासिक और कुछ अंशों में कल्पित होती है । पीछे साहित्य की परिपक्वता के साथ-साथ उत्साही कविगण उनके आधार पर सुन्दर आख्यानों की रचना कर डालते हैं । हिन्दी साहित्य का जन्म ऐसी परिस्थितियों में हुआ, जिसमें वीर गाथाओं को छोड़कर आख्यान आदि विषयों की ओर उसे झुकने का अवसर कम मिला, फिर भी यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि विक्रमीय 14वीं शताब्दी में कुछ छोटे-मोटे आख्यानों का प्रचार अवश्य था । 15वीं शताब्दी के साहित्य को हम ऐसी प्रौढ़ावस्था में पाते हैं, जिससे इस अनुमान की पुष्टि होती है, कि इसके बहुत वर्ष पूर्व भी साहित्य में अच्छे-अच्छे आख्यानों की रचना होने लगी थी, परन्तु दुर्भाग्यवश उनका लोप हो गया है, अभी तक जो कुछ पता चला है, उससे आख्यानक काव्य की श्रृंखला 15वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक निरन्तर चली आ रही है । {2}

---

1. {संक्षिप्त पद्मावत} अर्थात् मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत काव्य का संक्षिप्त संस्करण {संकलन कर्ता और संपादक} श्यामसुन्दर दास और सत्यजीवन वर्मा-पृ03 {प्रकाशक इंडियन प्रेस, पब्लिकेशन} प्रा. लि. प्रयाग- 1959

आख्यान लिखने वाले भक्त कवि और सूफी सन्त दोनों थे पर इन दोनों के ग्रन्थों में शैली, उद्देश्य इन सभी बातों में काफी अन्तर था, इसके आधार पर हिन्दी साहित्य के आख्यान को दो सम्प्रदायों में विभक्त कर सकते हैं - भक्त सम्प्रदाय और सूफी सम्प्रदाय, इन आख्यानक कवियों में सब से बड़ा अन्तर तो यह है, कि एक का उद्देश्य काव्य के द्वारा केवल मनोरंजन देना था, और दूसरे का विचार था, धार्मिक विचारों का प्रचार करना । सूफी सन्त कवि प्रायः सूफी मत के अनुयायी थे जिनका उद्देश्य था मनोरंजक प्रेमगाथाओं द्वारा अपने उदार आध्यात्मिक भावों को जनता के कानों तक पहुँचाना । उनकी कहानियाँ सब प्रकार से हिन्दू थीं, पर यदि अन्तर था, तो केवल मात्र उनकी प्रेम भावना में जो उनके धर्म की विशेषता थी । §3§

भक्त कवियों में और सूफी कवियों में समानता केवल भाषा की थी, दोनों हिन्दी भाषा का प्रयोग करते थे, पर एक साहित्यिक भाषा अपने काव्य में लिखता था, दूसरा प्रचलित अपरिमार्जित भाषा को लेकर अपने उद्देश्य को पूर्ण करता था । भक्त कवि बहुछन्द प्रिय थे । उन्हे छन्दः शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था । सूफी सन्त अपनी विवशता के कारण, केवल दोहे चौपाई का प्रयोग करते थे, उनका उद्देश्य था जनता के कानों में अपने भावों को भाँति-भाँति पहुँचाना । अतः उन्होने जनता में प्रचलित भाषा और सरल छन्दों का उपयोग किया, एक का उद्देश्य था, काव्य कला लिखते हुए मनोरंजन करना, दूसरे का उद्देश्य था, मनोरंजन करते हुए अपने भावों को पाठकों के हृदय में बैठाना, यह सब ऊपरी तड़क-भड़क में सिमट कर रह गया, और दूसरा अपने उद्देश्य में सफल हुआ, या नहीं परन्तु उसने अपने निःस्वार्थ सरल प्रयत्न से जनता में प्रसिद्ध हो गया, और साहित्य के क्षेत्र में अमर हो गया ।§4§

---

2. §पेज नं. 7 का§ मलिक मुहम्मद जायसी कृत पदमावत्
   डॉ० श्याम सुन्दर दास और सत्य जीवन वर्मा
   पृ0- 3,4
3. वही - पृ0 4
4. पदमावत -मलिक मुहम्मद "जायसी कृत "
   डॉ० श्याम सुन्दर दास और सत्य जीवन वर्मा, पृ0- 5

सूफी सन्त कवियों के आख्यानों का आदर्श "मसनवी" काव्य था, जिसका प्रचार फारसी साहित्य में अधिक है, और इसी आधार पर उर्दू में भी काव्य लिखे गये । ऐसे काव्य में हम महाकाव्य की गम्भीरता, सरसता और सुन्दरता पाते हैं, जिन्हे भक्त कवियों ने आख्यान लिखने में न पा सके, इसका एक कारण यह था, कि भक्त कवियों का आदर्श संस्कृत महाकाव्य था । संस्कृत काव्य शास्त्र के अनुसार महाकाव्य का नायक एक महान व्यक्ति रखा जाता था, ऐसे महान व्यक्ति प्रायः उन्हे इतिहास में मिल जाते थे, जिन्हे वे अपने महाकाव्य का नायक बनाते थे, हिन्दी साहित्य में एक प्रकार से महाकाव्य की कमी है । जो हैं भी उनके नायक प्रायः ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी ओर हम धार्मिक या साहित्यिक दृष्टि से देखते हैं । कल्पित व्यक्तियों को लेकर महाकाव्य की रचना करने की ओर हिन्दू कवियों का एक प्रकार से ध्यान ही नहीं गया ।﴾1﴿

दूसरा कारण एक और है, जिसके वशीभूत होकर भक्त कवियों ने आख्यानों के प्रणयन में भली भाँति सफल न हो सके । वह है, साहित्यिक और नैतिक परिस्थिति । हिन्दी साहित्य की जब से उन्नति आरम्भ हुई तभी से हिन्दू पराधीन हो चले थे । साहित्य के प्रारम्भ में केवल "पृथ्वी राजरासो" ही एक ऐसा ग्रन्थ रचा गया जिसे हम "महाकाव्य" कह सकते हैं । बाद में जब हिन्दू विदेशियों के शासन में आने लगे तब उन्हे धर्म संकट ने आ घेरा, इसमें संदेह नहीं कि भक्त कवियों ने हिन्दी साहित्य में आख्यान काव्यों के लिखने में सफलता प्राप्त की हो, तो वह है, "कवि मलिक मुहम्मद जायसी" को सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता है । जायसी के पूर्व के दो कवियों के ग्रन्थों का पता चला है, ऐसा जायसी के लिखने से ज्ञात होता है, कि उनसे पूर्व आख्यानों का प्रचार था, जायसी अपनी "पद्मावत" में लिखते हैं :- एक उद्धरण दृष्टव्य है ।

> बिक्रम धँसा प्रेम बारा । सपनावति कहँ गयऊ पतारा ।
> मधूपाछ मुगुधावति लागी । गगनपूर होइगा बैरागी ।
> राज कुँवर कंचनपुर गयउ । मिरगावति कहँ जोगी भयउ ।
> साधा कुँवर मनोहर जोगू । मधुमालति कहँ कीन्ह वियोगू ।
> प्रेमावति कहँ सुरसरि साधा । ऊषा लगि अनिरूधबर बाँधा । ﴾2﴿

---

1. पद्मावत - मलिक मुहम्मद "जायसी कृत"
   डॉ0 श्याम सुन्दर दास और सत्यजीवन वर्मा - पृ0 5
2. पद्मावत - जायसी ग्रंथावली - सम्पा.आ. रामचन्द्र शुक्ल - प्रथम सर्ग ।

......10/-

इससे यह स्पष्ट हो जाता है, कि "जायसी के पूर्व स्वप्नावति, मुगधावति, मिरगावति, मधुमालति और प्रेमावति इन पाँच आख्यानों का प्रचार हिन्दी साहित्य में था । इन उल्लिखित आख्यानों में मृगावती और मधुमालती" तो काव्य रूप में हस्तगत हुई है, शेष का अब तक पता नहीं चला, संभव है, आगे चलकर इनका भी पता चल जाए । जायसी के पश्चात् आलम्, उसमान, शेखनबी, कासिम, नूरमोहम्मद, फाजिल शाह, आदि अनेक कवि हुए हैं, जिनके आख्यान-ग्रन्थ पद्मावत ही के ढ़ंग के हैं । असमान-कृत, चित्रावली, तथा नूरमोहम्मद-कृत "इन्द्रावती" काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित भी हो चुकी है । (1)

पौराणिक आख्यानों की प्रासांगिकता :-

विश्व के काव्यों की परम्परा पर समग्रतः विचार करने पर यह भली-भाँति ज्ञात होता है, कि काव्य कथा के मूल स्त्रोत के रूप में प्रत्येक देश के कवियों ने पौराणिक आख्यान अथवा इतिहास को ग्रहण किया है, इलियड, और ओडेसी के प्रणेता होमर से लेकर "राम चरित मानस" के कवि "तुलसीदास" तक सबने पौराणिक साहित्य से ही प्रेरणा ग्रहण कर अपने काव्य हेतु विषय वस्तु ग्रहण की है । एक प्रश्न उठता है, कि पौराणिक साहित्य ही काव्य का उपजीव्य क्यों रहा है ? इस प्रश्न पर विचार करने पर एक बात जो सबसे पहले उभर कर सामने आती है, वह यह कि जिन महत् चरित्रों की अवतारणा द्वारा कवि आदर्श मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है । उन महान चरित्रों की कथा विस्तृत रूप में पुराणेवर साहित्य में नहीं मिलती, वैदिक और औपनैषदिक्-साहित्य में यद्यपि उनमें से अधिकांश चरित्रों का उल्लेख मिलता है, लेकिन उनके जीवन-वृत्त का सविस्तार वर्णन नहीं मिलता, फिर वैदिक साहित्य मंत्रों अथवा ॠचाओं का साहित्य है, उसमें कथा के नाम पर कुछ घटनाएँ या कुछ कथा-सूत्र मिल जाएँ, लेकिन पूरा का पूरा जीवन-वृत्त मिलना सहज नहीं है, अतः वैदिक अथवा औपनैषदिक् को काव्य की कथा का आधार बनाना सम्भव नहीं हुआ । (2)

---

1. पद्मावत - जायसी ग्रन्थावली सम्पादक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रथम सर्ग
2. हिन्दी की आधुनिक प्रबन्ध कविता का पौराणिक आधार नंदकिशोर नंदन,पृ. 1 प्रकाशकः- प्रकाशन संस्थान, 216 श्री राम नगर, शाहदरा दिल्ली- 110032 नंद किशोर नंदन, प्रथम संस्करण सितम्बर" 1978

जहाँ तक लोक कथाओं से प्रेरणा ग्रहण करने का प्रश्न है लोक कथाओं के नायक इतने उद्दान्त और आदर्श नहीं रहे हैं, कि उनके माध्यम से शाश्वत जीवन मूल्यों की स्थापना की जाती, इस संदर्भ में जायसी की "पद्मावत" के राजा " रत्न सेन " का उल्लेख आवश्यक है, जो " हीरामन " तोता से पद्मावती के अनुपम सौन्दर्य की प्रशंसा सुनकर पागल हो उठते हैं, और माँ, पत्नी परिवार सबको छोड़कर उसकी खोज में निकल पड़ते हैं । यही कारण है, कि " पदमावत् " के रत्न सेन का चरित्र जन जीवन को किंचित मात्र भी प्रभावित नहीं कर सका । लेकिन "राम चरित मानस" के राम का व्यक्तित्व सम्पूर्ण भारत के जन जीवन को सैकड़ों वर्षों से अनुप्राणित करता आ रहा है, अस्तु ऐसी स्थिति में काव्य की कथा प्रेरणा के रूप में पौराणिक साहित्य का स्वीकार किया जाना बिल्कुल स्वाभाविक सा लगता है, सम्भवतः इन्हीं महत्वपूर्ण तथ्यों को ध्यान में रखकर हमारे यहाँ के लक्षणकारों ने काव्य की वस्तु को इतिहास का आवश्यक अंग माना है ।

" पुराणों का महत्त्व निरूपित करते हुए अनेक विद्वानों ने यह स्वीकार किया है, कि पुराणों ने न केवल संस्कृत साहित्य को प्रभावित किया है, अपितु समग्र भारतीय साहित्य को प्रभावित अनुप्राणित किया है । पुराणों ने भारतीय साहित्य को विशेषकर - काव्य के लिए उपजीव्य प्रस्तुत किया है, काव्य के अन्तर्गत भी प्रबन्ध काव्य के लिए सामाग्री प्रस्तुत करने वाले साहित्य में पुराण-साहित्य का महत्त्व सर्वोपरि है । " (1)

" पौराणिक साहित्य का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है, कि हिन्दू संस्कृति के आधार महत् चरित्रों का जीवन वृत्त विस्तृत रूप में पुराणों में ही मिलता है, "डॉ० सम्पूर्णानन्द" ने पुराणों की इस देन का उल्लेख करते हुए लिखा है, कि वेद में जो लोग कागज पर खिंची हुई रेखाऐं हैं, वे पुराणों के पृष्ठों में जीते जागते मनुष्य बन जाते हैं । विश्वामित्र, पुरूखा, शुनः शेप और सुदास जैसे चरित्रों के नाम वेदों में तो मिल जाते हैं, मगर उनके इतिवृत्त नहीं मिलते, पुराणों में ही राम-कृष्ण से लेकर पुरूरवा तक का चरित्र मिलता है, अतः काव्य की सामाग्री के सन्दर्भ में पुराण-साहित्य का महत्त्व स्वयं सिद्ध है । (2)

---

1. " विश्व साहित्य की रूप रेखा ", श्री भगवत शरण उपाध्याय, पृ0- 486
2. हिन्दी साहित्य - एक आधुनिक परिदृश्य- डॉ0 अज्ञेय - पृ0- 53

हिन्दी के साठोत्तरी कवियों ने भी काव्यों के लिए पौराणिक साहित्य से ही प्रेरणा ग्रहण की है, द्विवेदी युग में कवियों पर भी हिन्दू संस्कृति के विकास क्रम को प्रस्तुत करने वाले पुराणों का प्रभाव असंदिग्ध रूप में था, अपने प्राचीन गौरव और ऐश्वर्य वैभव चित्रण के द्वारा पतन, विनाश और विध्वंश के कगार पर खड़े वर्तमान भारत की धमनियों में शक्ति और प्रेरणा का संचार करना कवियों का पावन कर्तव्य समझा जाता था, इसी तथ्य की ओर संकेत करते हुए हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि आलोचक "अज्ञेय ने हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य" में लिखा है, कि " इतिवृत्त काव्य अधिकतर जातीय उत्कर्ष के ऐतिहासिक अथवा पौराणिक युगों से प्रेरणा लेता था, आत्म-प्रतिष्ठान के लिए अतीत गौरव का स्मरण और उसके प्रमाण से भावी उत्कर्ष की सम्भावना करना स्वाभाविक था " । (1)" इससे बिल्कुल स्पष्ट है कि हिन्दी के आधुनिक काव्यों की सृजन प्रेरणा के रूप में पौराणिक साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण रही है । " (2)

संस्कृति के विकास की दृष्टि से भारत, यूनान और रोम का उल्लेखनीय स्थान माना जाता है, यों विश्वास के धरातल पर सभी मानव जातियाँ समान होती है, लेकिन हिन्दुओं, यूनानियों तथा रोमानियों में बहुत दूर तक साम्य था, इसीलिए इन जातियों में अपने बीच रहने वाले जिन देवताओं की कल्पना की, वे अधिकांशतः एक समान और मनुष्य की तरह एक दूसरे से प्रेम - घृणा करने वाले और मरने - मारने वाले थे । यही कारण है, कि हिन्दुओं के देवता हों, अथवा ग्रीक, अथवा तो यूनान के वे मनुष्य की तरह आचरण करते हैं, ऐसे जन विश्वासों में बुद्धि की अपेक्षा विश्वास का प्राधान्य स्वाभाविक होता है । (3)

मिथक के सम्बन्ध में भी यही धारणा है, किन्तु मिथक के सम्बन्ध में नवविकसित धारणा के अनुसार मिथक आकांक्षा की उदात्तीकृत अभिव्यक्ति नहीं है, मिथक भी श्रम का एक रूप है । स्वप्न, प्रतीक और मिथक प्रतीक में मूल अन्तर यह है, कि जहाँ स्वप्न प्रतीक आकांक्षा की अभिव्यक्ति के रूप में आते हैं, वहाँ मिथक प्रतीक मनुष्य की सृजनशीलता का मानवीय रूप है, भारतीय मिथकों

1. हिन्दी साहित्य - एक आधुनिक परिदृश्य - डॉ० अज्ञेय - पृ०- 53
2. "उर्वशी" उपलब्धि और सीमाँ-डॉ० अज्ञेय - पृ०- 132
3. हिन्दी की आधुनिक प्रबन्ध कविता का पौराणिक आधार -नंद किशोर नंदन-पृ. 6

.....13/-

में हमारा निकट परिचय राम, कृष्ण, शिव, सीता, राधा, द्रौपदी, रावण आदि मिथकों से है, इनकी रचना के मूल में मात्र जनविश्वास ही नहीं है, मानव की सृजनशक्ति सक्रिय होती है, मिथक के सम्बन्ध में रोजर गोरोदी जैसे आलोचकों का स्पष्ट मत है, कि " मिथक ऐसे होते हैं जो हमें कहीं भी नहीं ले जाते है, ऐसे मिथक सब प्रकार से अनुपयोगी एवं हानिप्रद है ।वास्तविक मिथक की चर्चा करते हुए वे लिखते हैं, " दूसरे है,§मिथक§ जो हमें अपने सृजन केन्द्रों तक पहुँचाते हैं, जो लगातार नये क्षितिजों का उद्घाटन करते हैं, और अपनी ही सीमाओं को पार करने में हमारी सहायता करते हैं, कुछ बन्द मिथक होते हैं, और कुछ खुले मिथक होते हैं, इन दोनों में से दूसरा ही सही मिथक माना जाता है । §1§

ग्रीक और रोम के पुराणों के अपूर्व साम्य का उल्लेख करते हुए डॉ० भागवत शरण उपाध्याय का मत है, कि " ग्रीक और रोम में ऐसे पुराण करीब - करीब एक जैसे हैं, क्यों कि ग्रीक की संस्कृति के बाद ही रोम की संस्कृति का विकास हुआ, और ग्रीक की संस्कृति के कमजोर हो जाने के कारण रोम ने उसे जत्त कर लिया इसी से रोमन देवता बदले नामों वाले ग्रीक देवता ही हैं, ग्रीक देवताओं की कहानियाँ रोमन देवताओं की कहानी बन गई । दोनों में अन्तर इतना है, कि अनेक जातियाँ, अनेक बस्तियाँ और अनेक नगर होने के कारण जहाँ ग्रीक देव परिवारों तथा विश्वासों पुराणों में विविधता के दर्शन होते हैं, वहाँ एक ही तंग घाटी में बसे होने के कारण रोम के पुराण एवं विश्वासों में अनेकता दिखलाई पड़ती है । §2§

ग्रीक और रोमन पौराणिक कथाओं के एक दो उदाहरणों से यह तथ्य भली-भाँति समझा जा सकता है कि पौराणिक साहित्य प्रत्येक देश में जन - विश्वासों की प्रेरणा से रचा जाता है । जिसके कारण उसकी मूल आत्मा प्रायः एक सी होती है । §3§

---

1. वाम साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र - अलख नारायण का लेख पहल - 10,11,
2. हिन्दी की आधुनिक प्रबन्ध कविता का पौराणिक आधार - नंद किशोर नंदन - पृ0 7
3. - वही - पृ0 7

" प्रेम की देवी अफ्रोदीती को ही रोमन पुराणों में वीनस कहा गया है, ग्रीकों और रोमनों ने वीनस की अनेक अमर प्रतिमाओं की रचना की, जिनमें उसे सौन्दर्य का साकार रूप प्रदान किया है । अफ्रोदीती का जन्म समुद्र के नीले फेन से हुआ माना जाता है, उसके आकर्षण की कोई सीमा नहीं है, देवता और मनुष्य दोनों ही उसके प्रेम के भूखे और मारे हैं, यों तो उसके साथ अनेक प्रेमी या पति का नाम जुड़ा है, लेकिन उसका सच्चा प्रेमी आदोनिस नामक एक नौजवान था, जिसे उसने अपने हृदय का सम्पूर्ण प्यार दिया था, मगर दुर्भाग्यतः जंगली सुअर ने उसे मार डाला । §1§

ग्रीक देवताओं में सर्वाधिक सुन्दर और अल्पवय का माना जाने वाला एरोस का साम्य भारतीय पुराणों में वर्णित कामदेव से दिखलाई पड़ता है, प्रेम की देवी जिसे सौन्दर्य की साकार प्रतिमा भी कह सकते हैं, - एरोस की माँ और अरेस पिता था । मूर्तियों में बालक के समान दिखाई पड़ने वाला एरोस पंख और धनुष धारण करता है, इसके जीवन की कथाएँ भी कम रोमांचकारी और मनोरंजक नहीं है । §2§

इसी प्रकार विश्व की अनेक सुसंस्कृत भाषाओं में पौराणिक साहित्य के दर्शन होते हैं, जिनसे प्रेरणा ग्रहण कर कवियों ने जातीय गौरव और संस्कृति को अभिव्यक्त प्रदान करने वाले महाकाव्यों की रचना की । लेकिन यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि भारत का पौराणिक साहित्य विश्व के किसी भी देश के पौराणिक साहित्य से अधिक समृद्ध और श्रेष्ठ है । §2§

भारतीय पुराणों की महत्ता प्रतिपादित करते हुए अनेक विद्वानों ने एक स्वर में यह स्वीकार किया है, कि पौराणिक साहित्य ने सम्पूर्ण भारतीय काव्य को अपनी उदात्त और जीवन्त प्रेरणा से न केवल उपजीव्य अथवा काव्य वस्तु प्रदान की है, वरन् जीवनगत् महत् सन्देशों और अपनी मनोरम कल्पना पूर्ण विविध शैलियों से अनुप्राणित भी किया है । §3§

---

1. हिन्दी की आधुनिक प्रबन्ध कविता का पौराणिक आधार - नंद किशोर नंदन पृ0- 7
2. - वही - पृ0- 7
3. - वही - पृ0- 7

.... 15/-

भारतीय पुराणों में श्रेष्ठ श्रीमद्भागवत की श्रेष्ठता का उल्लेख करते हुए " आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि श्रीमदभागवत समस्त पुराणों में अधिक प्रसिद्ध और सारे भारत में समादृत है, इसमें जो कवित्व है, वह बहुत ही ऊँचे दर्जे का है, रामायण और महाभारत की भाँति इसमें भी भारतीय साहित्य को बहुत दूर तक प्रभावित किया है । श्रीमद्भागवत पुराण के कवित्व का प्रभाव आधुनिक हिन्दी के कवियों पर तो पड़ा ही परन्तु इसके साथ ही मध्य कालीन हिन्दी कविता के उन्नायक सर्वश्रेष्ठ प्रबन्धकार तुलसी के " रामचरित मानस " पर स्पष्टतः दिखाई पड़ता है, इससे यह कहना आवश्यक नहीं होगा कि श्रीमद्भागवत केवल एक धर्म ग्रन्थ नहीं है, बल्कि यह एक उच्च कोटि की कविता के सौंदर्य से परिपूर्ण एक सुन्दर काव्य कृत्ति भी है ।" §1§

आचार्य बलदेव उपाध्याय के शब्दों में श्रीमद्भागवत की कविता में अद्भुत चमत्कार हैं, जो सैकड़ों वर्षों से सहृदय पाठकों को अपनी शब्द माधुरी तथा अर्थचातुरी से हठात् आकृष्ट करता आ रहा है, नवीन साहित्यिक परिस्थिति के उदय ने भी इस आकर्षण में किसी प्रकार की न्यूनता उत्पन्न नहीं की है, भागवत - रस तथा माधुर्य का अगाध स्रोत है । §2§

<u>पुराण कथाओं की प्रासंगिक प्रस्तुतियाँ, विविध आयाम</u> :- पुराण शब्द का प्रयोग सभी वैदिक संहिताओं में प्रचुर मात्रा में मिलता है, ब्रह्मण और आरण्यक ग्रन्थों में पुराण शब्द का प्रयोग लगभग कई स्थानों पर हुआ है । निश्चित ही यह साहित्य के एक विशिष्ट वर्ग की ओर संकेत करता है, प्राचीन युग में वेदों की संहिताओं के समान, पुराण नाम की भी सम्भवतः कोई संहिता रही होगी, जिसमें प्राचीन कथाओं का संग्रह रहा होगा, वेद की संहिताओं के मंत्रों के अर्थ करने में पुराण संहिता के आख्यानों से सहायता ली जाती रही होगी । §3§

अथर्ववेद में एक स्थान पर चारों वेदों की रचना के साथ पुराण की रचना का भी उल्लेख मिलता है । §4§

ऋचः सामानि छंदांसि पुराणं यजुषा सह ।
उच्छिष्टां जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः ।। §1§

---

1. हिन्दी साहित्य की भूमिका = आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ0-60
2. पुराण विमर्श आचार्य बलदेव उपाध्याय - पृ0- 603
3. हिन्दी के पौराणिक नाटकों के मूल स्रोत्र - डॉ0 शशि प्रभा शास्त्री -पृ0- 6
4. अथर्व वेद संहिता- 11,7,24

.......16/-

इससे इतना तो स्पष्ट ही है, कि अथर्ववेद के संकलन काल में पुराण नाम से प्रख्यात एक आख्यान साहित्य ने निश्चित एवं महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया था, अन्यथा उसे चारों वेदों के समकक्ष स्थान प्राप्त न होता, समानश्रेणी में स्थान दिये जाने से यह भी ध्वनित होता है, कि पुराण संहिता का आकार ऋग् - यजु - साम एवं अथर्व संहिताओं से कम नहीं रहा होगा, संभव है, कि पुराण संहिता के आकार की विशालता वेदों से भी अधिक हो, जिस प्रकार विषय की विविधता और आकार की विशालता के कारण ही महाभारत पंचम वेद कहा जाने लगा ।

पुराण साहित्य की अवस्थिति सूत्र-साहित्य में तो निश्चित रूप से स्वीकार कर ही ली गई थी, इस पुराण साहित्य का विषय आज के युग में उपलब्ध पुराणों से लगभग मिलता जुलता ही था, गौतम धर्मसूत्र में, जो धर्मग्रन्थों में प्राचीनतम् माना जाता है, लिखा है कि राजा को न्याय करते समय वेद, धर्मशास्त्र, वेदांग तथा पुराण सभी का अवलोकन करना उचित है । §1§ पुराण का तात्पर्य यहाँ एक विशिष्ट धर्म के साहित्य से ही है ।

" आपस्तम्ब धर्मसूत्र में पुराणों से दो उद्धरण प्राप्त है, यह धर्मसूत्र, चौथी या पांचवी शती का है, निश्चित ही उस समय तक पुराण साहित्य अस्तित्व में आ चुका होगा, महाभारत तथा पुराणों का सम्बन्ध भी हमें इसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बाध्य करता है, कि पुराण साहित्य का निर्माण महाभारत के अपने अन्तिम रूप में आ जाने से पूर्ण ही हो चुका होगा । §2§

पुराणों की प्राचीनता के सम्बन्ध में यह एक तथ्य भी दृष्टव्य है, कि ऋग्वेद एवं अथर्व वेद संहिताओं के संकलन के मध्य प्रयत्ति अन्तर है । ऋग्वेद के मंत्रों के स्पष्टीकरण के लिए किसी भी पृष्ठ भूमि के अभाव में इस प्रकार की लोक प्रचलित कथाओं का संकलन अवश्य हुआ होगा, जो उनपर प्रकाश डाल सकने में समर्थ हों, प्रो0 मैक्स मूलर के अनुसार अथर्ववेद संहिता के संकलन का समय लगभग 1100 ई0 पूर्व है, इसको निश्चित मान लेने की स्थिति में इसके और यास्क के मध्य का अन्तर चार या पाँच शताब्दियों से अधिक नहीं रह जाता, यास्क से पूर्व ही निश्चित रूप से ऐसे व्यक्तियों का एक सम्प्रदाय बन चुका था, जो वेद मंत्रों की व्याख्या पौराणिक आख्यानों को आधार बनाकर करने का पक्षपाती था ।

---

1. होल्टज्मैन-महाभारत, भाग-4, पृ0-29 तथा ई0डब्ल्यु हापकिन्स - द ग्रेट एपिक्स ऑफ इंडिया पृ0- 47
2. विन्टर नित्स इंडियन लिट्रेचर, भाग-1 1927, पृ0- 519

.....17/-

इस प्रकार के आख्यान विदों को निरूक्तकार यास्क ने "ऐतिहासिक ।" नाम से सम्बोधित किया है। यह ऐतिहासिक सम्प्रदाय, यास्क के कितने पूर्व स्थापित हुआ था, इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ कह सकना सम्भव नहीं है, क्यों कि यास्क से पहले भी कई निरूक्तकार हो चुके हैं, जिनका उल्लेख यास्क ने अपने निरूक्त में किया है, इनके ग्रन्थ अब प्राप्त नहीं है ।

इस विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है, कि पुराण की परम्परा बहुत प्राचीन युग से चली आ रही है, अनेक वैदिक आख्यानों का मूल रूप से पुराणों में सुरक्षित रहना भी पुराणों की प्राचीनता पर प्रकाश डालता है, शुनः शेप, देवादि तथा राजा सुदास के आख्यान इसी प्रकार के ज्वलन्त उदाहरण है ।

" शुनः शेप का आख्यान वैदिक आख्यान है, संहिता, ब्राह्मण सूत्र बृहद् देवता तथा अनुक्रमणी प्रभृति वैदिक ग्रन्थों में इसके विवरण मिलते हैं, अनेक पुराणों में भी यह आख्यान विविध रूपों में उपलब्ध है, समय की धारा के साथ इसमें अनेक परिवर्तन भी हुए हैं, तथापि इसका मूल रूप सुरक्षित है, संहिताओं की मंत्र रचना के समय यह आख्यान प्रचलित था, ऋग्वेद संहिता के कुछ मंत्रों से इस प्रकार का संकेत मिलता है, जिनका ऋषि भी शुनः शेप है, ऐतरेय ब्राह्मण से पुराण पर्यन्त इसके साथ राजा हरिश्चन्द्र का नाम सम्बद्ध मिलता है । " §1§

" राक्षस रूप में परिवर्तित राजा सुदास के अनुयायिओं द्वारा वसिष्ठ के 100 पुत्रों का मारा जाना तथा तप से राक्षस को मारने के लिए वसिष्ठ का शक्ति प्राप्त करने का आख्यान ऋग्वेद के युग में प्रचलित था । " §2§

" इस घटना का विशद वर्णन विभिन्न पुराणों में प्राप्त है । §3§

यह आख्यान रामायण में भी आया है । §4§

किन्तु वहाँ इसका असली रूप नष्ट हो गया है । वहाँ राजा का नाम सुदास न होकर "सौदास कल्माषपाद" है यहाँ वसिष्ठ के शाप से राक्षस रूप में परिवर्तित राजा के द्वारा वसिष्ठ के 100 पुत्रों के मारने का उल्लेख नहीं है, पुराणों के आख्यान में रामायण की अपेक्षा इस कथा का मूल रूप अधिक सुन्दर रूप से सुरक्षित है ।

---

1. हिन्दी के पौराणिक नाटकों के मूल स्रोत -डॉ० शशि प्रभा शास्त्री, पृ०-8
2. ऋग्वेद संहिता- 7,104, 116
3. अ- विष्णु पुराण 4,4,20-38 । भागवत पुराण 9,9,18,39 ।
   ब- वायु पुराण - 1,175,177 तथा 2,10-11 ब्रह्माण्ड पुराण
   स- 1,2,10,11 । महाभारत, आदि पुराण 176-177 ।
4. रामायण - 7,65,10-37

" देवापिका आख्यान भी ऋग्वेद में मिलता है । {1}

इसके अलावा अनेक पुराणों में भी मिलता है । {2}

इसके अतिरिक्त निरूक्त भी है । {3}

वैसे विभिन्न स्थलों पर इन आख्यानों में कुछ भिन्नता मिलती है, किन्तु पुराणों में इसका मूल रूप सुरक्षित चला आ रहा है, वामनावतार, मत्स्यावतार, इन्द्र के द्वारा दिति का गर्भछेदन तथा मरूतों की उत्पत्ति, ययाति उर्वशी तथा इसी प्रकार के अनेक आख्यान पुराणों में उपलब्ध है, जिनकी पूर्व परम्परा वैदिक काल पर्यन्त अक्षुण्ण मिलती है ।

पुराणों की लोकप्रियता के कारण ही आज तक अनेकों पुराणों की रचना का क्रम अविच्छिन्न है, किन्तु इन आधुनिक पुराणों में भी प्राचीन पुराण - संहिताओं की सामाग्री का अभाव नहीं है ।

विण्टर नित्स ने भी इस संदर्भ में अपनी सहमति व्यक्त की है।{4}

पुराण सातवीं शती में निश्चित रूप से रहे होंगे, क्योंकि इसके पश्चात् के वंश तथा हर्ष के समान प्रख्यात राजाओं तक के नाम पुराणों में उपलब्ध नहीं होते, दूसरा मत, पुराणों को प्रथम शती का भी निर्धारित करता है, क्योंकि प्रथम शती के बौद्ध महायान ग्रन्थों से पुराणों का विषय पूर्याप्त मिलता जुलता है । ललित - विस्तर को न केवल पुराण की संज्ञा ही प्राप्त है, वरन् इसका अधिकांश भाग पुराणों के समान है, सद्धर्म पुन्डरीक तथा महावस्तु के कुछ अवतरण अतिशयोक्ति-पूर्ण तथा भक्तिपूर्ण होने की दृष्टि से ही पुराणों की कोटि में आते हैं ।

पाश्चात्य विद्वान, पुराणों का जन्म उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य के साथ ही हुआ मानते हैं, किन्तु उनका मत विभिन्न तर्कों के समक्ष पुष्ट नहीं कहा जा सकता ।

वाण {सत्तम शती} ने अपने ग्रन्थ "हर्षचरित" में लिखा है, कि वह बचपन में किस प्रकार वायु पुराण का पाठ सुना करता था, अरबी यात्री अलबरूनी {1030 ई0} ने अठारह पुराणों की सूचना दी है । दार्शनिक कुमारिल {अष्टम शती} शंकर {नवम शती} तथा रामानुज {बारहवीं शती} पुराणों को एक अतिप्राचीन तथा पवित्र ग्रन्थ मानते थे, एवं अपने सिद्धान्तों की पुष्टि के लिए पुराणों का आश्रय लेते थे ।

---

1. ऋग्वेद - 10,92,7 {2} विष्णु पुराण 4,20,7 से आगे, भागवत 9,22,14,17, मत्स्य- 50,39-41,ब्रह्म-13,117,महाभारत उद्योग पर्व 148,54-66
{3} निरूक्त- 2,10 {4} हिस्ट्री आफ इंडियन लिट्रेचर,कलकत्ता विश्वविद्यालय- 1927, पृ0- 5 - 25

.....19/-

इस प्रकार पुराणों की प्राचीनता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता । हिन्दू विश्वासानुसार पौराणिक वाड्मय सर्वप्रथम ब्रह्मा से ही प्रादुर्भूत हुआ है । अन्तर केवल यही है, कि वैदिक वाड्•मय की प्रथम उपलब्धि जिस रूप में हुई, उसी रूप में उसकी रक्षा की जाती रही, उसकी पदावली में किसी प्रकार के परिवर्तन को अग्राह्य माना गया वह जिस रूप में प्रथम बार सुना गया, उसी रूप में बाद में भी बराबर कहा सुना जाता रहा, इसीलिए उनका दूसरा नाम " अनुश्रव " तथा "श्रुति" पड़ा, पर पौराणिक वाड्•मय की रक्षा शब्दों में नहीं, अपितु अर्थों में की गई, उनकी भाषा बदलती रही, पर अर्थ वही रहा । इस प्रकार वेद में जो कुछ उपलब्ध है, वह अपने आदिम शब्द और रूप दोनों में है, जब कि पुराण केवल अपने मौलिक अर्थों में ही सुरक्षित है ।

उपर्युक्त विवेचन से इस निष्कर्ष पर सरलता से पहुँचा जा सकता है, कि आख्यान साहित्य प्राचीन वैदिक युग में ही समृद्ध हो चुका था । वैदिक साहित्य के समान युग का समादर भी उसे प्राप्त हुआ था, इस पर विश्वास किया जा सकता है, कि एक ओर तो वैदिक ऋषि वेद सूक्तों का सृजन कर रहे हों, और दूसरी ओर समाज के विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्ति एवं सामान्य जनता के कवि मौन बैठे रहे हों, अवश्य ही जन कवियों ने जनभाषा में गद्य और पद्य दोनों में राष्ट्रीय वीर पुरूषों का चरित्र गाया होगा, तथा इस प्रकार बिखरी हुई घटनाओं को इकठ्ठा किया होगा। प्राचीन काल में लोक गायकों द्वारा गाये गए, तथा वर्णन किये गये चरितों का कुछ रूप हमें वैदिक साहित्य में देखने को मिल जाता है । किन्तु इस प्रकार के आख्यानों का अधिक निखरा हुआ रूप हमें रामायण, महाभारत एवं पुराणों में ही उपलब्ध होता है । §1§

जहाँ तक पुराणों के स्रोत्र का प्रश्न है, महाभारत तथा पुराण एक समान स्रोत्र से उत्पन्न हुए हैं, यह समान स्रोत्र मौखिक परम्पराएँ तथा प्राचीन कथा कहानियाँ थी, जो वैदिक काल में जन समुदाय के मध्य तथा भाटों की कविता के रूप में चली आ रही थी। §2§

कुछ पाश्चात्य मनीषी पुराणों का मूल स्रोत्र, प्राचीन विश्वासों तथा कथाओं में स्वीकार करते हैं, कुछ सूर्य आदि प्राकृतिक शक्तियों की क्रियाओं में और

1• विण्टर नित्स – हिस्ट्री ऑफ इन्डियन लिट्रेचर, कलकत्ता विश्वविद्यालय – 1927 , पृ0– 226

2• – वही – पृ0– 521

कुछ आदिम जातियों की मनोभावनाओं पर आधारित काल्पनिक कहानियों में, किन्तु ये धारणायें निर्मूल हैं, सम्भवतः अपने यहाँ के "मायथोलोजिकल" साहित्य में उपलब्ध - विषय - वस्तु के अनुकूल ही इन विद्वानों ने एक कल्पित विचार धारा गढ़ ली है, वस्तुतः सृष्टि की उत्पत्ति आदि से सम्बद्ध कथाओं तथा मानवीकृत भौतिक तत्वों से सम्बद्ध कथाओं को ही, जिनका संकलन कथा " कोविद ग्राम वृद्धो " के मुख से सुनकर किया गया था, पुराण साहित्य के नाम से अभिहित किया गया ।

राम कथा का विकास :- राम के चरित्र को लेकर लिखे गये साहित्य की एक बहुत लम्बी परम्परा वर्षों से चली आ रही है । इस परम्परा का प्रारम्भ कुछ लोग वेदों से करते हैं, और वेदों में राम कथा का रूप देखते हैं, किन्तु यह बात मान्य नहीं हो सकती, क्योंकि राम उत्तर वैदिक काल के महापुरूष हैं । वैदिक काल के नहीं. वैदिक साहित्य के अन्तगर्त " राम " कहीं कहीं मिलता है । परन्तु इसका अर्थ दशरथ के पुत्र राम से नहीं, वरन् अन्य व्यक्तियों से है । ॥1॥

राम वैदिक कालीन व्यक्ति न होने से यह स्वाभाविक है, कि वेदों में उनका उल्लेख न हो, इसके साथ ही वाल्मीकि तथा अन्य कुछ राम कथाओं में यह भी उल्लेख है, कि राम ने अपने विधाध्ययन के प्रारम्भ में वेदों का अध्ययन किया, तो वेदों में उनके चरित्र का विवरण कैसे प्राप्त हो सकता है ।

राम काव्य सम्बन्धी अनेक कृतियां जैन काव्य परम्परा में भी प्राप्त होती हैं, इनमें राम कथा का काफी विस्तार है, किन्तु इस काव्य परम्परा में जैन दृष्टि-कोण से प्रस्तुत किया गया है । जैन राम कथाओं में "विमल सूरि" का "पउम् - चरियम् " जैन लोग राम को " पद्म " के नाम से पुकारते हैं । वैसे यह ग्रन्थ मूल रूप में "प्राकृत" भाषा में है । "विमल सूरि" का यह ग्रन्थ बड़ी सुन्दर एवं विशद शैली में लिखा गया है । "प्राकृत" के अलावा राम कथा संस्कृत भाषा में भी प्राप्त है । प्रथम ग्रन्थ "रविषेण कृत" पद्म चरित" आठवीं शताब्दी के आस-पास लिखा गया होगा । दशवीं शताब्दी में "हरिषेण" के कथा कोष में " रामायण कथानकम् " तथा " सीता कथानकम् " में प्राप्त होता है । 16वीं शताब्दी में "पद्मदेवविजय गणि" कृत राम चरित लिखा गया, जैन रामकथा में और जैनेतर संस्कृत राम कथा में अन्तर है । इनमें अवतारवाद की भावना नहीं है, और अन्य भी अनेक बातें, अलौकिक न होकर अधिक तर्क संगत है । उदाहरण के लिए स्वयंभू "कृत" पउम चरिऊ"

---

1. डॉ० कामिल बुल्के ॥राम कथा- उत्पत्ति और विकास ॥ पृ०-4-5

में रावण को दशानन इस लिए नहीं कहा गया है, क्योंकि उसके दस मुख थे, इसका एक कारण और बताया गया है वह यह है, कि बचपन में रावण खेलते-2 एक भांडार में पहुँच गया । वहाँ से उसे एक हार मिला, जिसमें नौ मणियाँ जुड़ी हुई थी, इस हार को उसने पहन लिया जिसके कारण प्रत्येक मणि में उसके मुख का प्रतिबिम्ब दिखलाई पड़ता था, इसके कारण उसे दस सिर या दस मुख कहने की परम्परा चल पड़ी ।

" संस्कृत साहित्य में भी राम काव्य की परम्परा प्रचलित है, इस परम्परा को हम 3 भागों में देख सकते हैं ।

1. पुराण साहित्य में राम काव्य
2. नाट्य साहित्य में राम काव्य
3. प्रबन्ध काव्यों में राम काव्य

इन साहित्यों का मूल स्रोत्र आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण है, परन्तु इनमें घटनाओं और प्रसंगों में भी काफी अन्तर है किन्तु मूल प्रेरणा वाल्मीकि कृत रामायण से ही प्राप्त हुई है, रामकथा का रूप अधिकांशतः पौराणिक और धार्मिक दृष्टिकोण से प्राप्त होता है, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से नहीं, इस धार्मिक और पौराणिक साहित्य का विकास 17वीं शताब्दी के पश्चात् रसिक सम्प्रदाय के रूप में विशेष रूप से हुआ । संस्कृत, हिन्दी, एवं अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं में प्राप्त असंख्य रामकथाओं को देखकर "गोस्वामी तुलसीदास जी" ने ठीक ही कहा है ।

" हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता
और - रामायण सत कोटि अपरा ।"(1)

संस्कृत के "महाकाव्य", प्रबन्ध काव्य आदि के रूप में लिखे गये, राम काव्य ग्रन्थ प्रायः वाल्मीकि रामायण पर आधारित है, और कथानक की दृष्टि से कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन उनमें नहीं मिलता । (2)

---

1. रामायण कथा विष्णुदास कविकृत
सम्पादन : पं0 लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी भूमिका - डॉ0 भगीरथ मिश्र
2. (राम कथा में डॉ0 कामिल बुल्केल के (द्वितीय संस्करण) पृ0- 19।

......22/-

सबसे पहला महा काव्य जिसमें :. रामचरित का उल्लेख है, वह कवि कुल गुरू "कालिदास" का "रघुवंश" है । इस महा काव्य में केवल राम का चरित्र ही नहीं, वरन् पूरे रघुवंश का वर्णन है, जिसका आधार वाल्मीकि रामायण है ।

छठीं शताब्दी के आस - पास "प्रवरसेन कृत" प्राकृत रचना "रावण वहो" नाम से राम - रावण युद्ध सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन है । और इसी के आस - पास "भक्ति काव्य" अथवा "रावण वध" नामक ग्रन्थ की रचना की गई । यह 22 सर्गों का ग्रन्थ था । वाल्मीकि रामायण के उत्तर कान्ड को छोड़कर अन्य कान्डों की कथा का विवरण मिलता है ।

सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ राम कथा को लेकर है, जो कि कुमार दास द्वारा रचित " जानकी हरण " इसकी कथा भी रामायण के प्रथम छः कान्डों पर आधारित है ।

नाटक साहित्य में राम चरित :- राम कथा को सबसे पहले "प्रतिभा" नाटक में (रघुवंश की कथा है,) और इसमें सीता को लक्ष्मी की अवतार के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

नाटक साहित्य में राम कथा :-

यह नाटक सात अंकों में लिखा गया है, इसके अन्तरगत राम के वनवास से लेकर रावण बध तक की कथा है । "भास" कृत दूसरा नाटक अभिषेक है ।

8वीं शताब्दी में भवभूति ने "महावीर चरित" और "उत्तर राम चरित" नामक दो नाटकों की रचना की, यह नाटक वाल्मीकि की प्रसिद्ध कथा पर आधारित है । इसके अलावा " अनंग हर्ष मातृराज " द्वारा "उद्धात राघव" नाटक की रचना हुई, जिसमें छः अंकों में वनवास से लेकर अयोध्या वापस आने की कथा दी हुई है, इस नाटक का कुछ भाग नवीन है ।

दशवीं शताब्दी में भी कई नाटक लिखे गये, जिनमें से मुख्य है - " मुरारि कृत " "अनर्ध राघव" "राजशेखर कृत" बाल रामायण" अज्ञात कवि कृत "हनुमन्नाटक" और 11वीं शताब्दी में दिङ्नाग द्वारा "कुंदमाला" नाटक की रचना की गई ।

......23/-

12वीं और 13वीं शताब्दियों में दो महत्त्वपूर्ण नाटक राम कथा को लेकर लिखे गये, प्रथम "जयदेव कृत" "प्रसन्नराघव" और दूसरा सोमेश्वर कृत " उल्लाध राघव नाटक "। इन दोनों की कथाऐं सीता - राम विवाह से प्रारम्भ होती है, और राम की अयोध्या यात्रा में समाप्त होती है।{1}

असमिया में राम कथा :

आसाम में राम कथा का प्रारम्भ 14वीं शताब्दी के आस - पास माना जाता है। सबसे पहले "माधव कंदली" की रामायण हमारे सामने आती है जो आसाम में रामचरित मानस के समान ही प्रसिद्ध है। इस पर वाल्मीकि रामायण का प्रभाव है, आसाम में प्राप्त राम कथा को चार भागों में बाँटा जा सकता है।

1. पद रामायण
2. गीति रामायण
3. कथा रामायण
4. कीर्तनियां रामायण

पद रामायण वाल्मीकि या भागवत की राम कथा पर आधारित है। कथा रामायण लिखने वालों में से मुख्य "रघुनाथ महन्त" है। इन्होंने राम कथा रामायण को "गद्य शैली में इसकी रचना की है। {2}

बंगाली में राम कथा :

बंगला साहित्य में भी सबसे अधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध ग्रन्थ "कृतिवास" द्वारा लिखित रामायण है। जिसकी रचना 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई, यहाँ पर रामायण का चयन बंगाल प्रदेश में प्रचलित लोक राम साहित्य से किया गया है। इसमें बंगाल प्रदेशीय संस्कृति तथा शैव और शाक्त संप्रदायों की भी गहरी छाप है। बंगला का अधिकतर राम साहित्य अध्यात्म रामायण या अद्भुत रामायण के अनुवाद रूप में है, राम लीला सम्बन्धित अनेक पदावलियाँ भी बंगला साहित्य में मिलती है। जो गेय रूप में प्रचलित है। {3}

---

1. रामायण कथा विष्णुदास कवि कृत पृ0- 19,20,21
2. रामायण कथा विष्णुदास कवि कृत पृ0- 22,सम्पादन- पं.लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी।
3. -वही- पृ0- 22,23

उड़िया में राम कथा :

उड़िया भाषा में राम कथा से सम्बन्धित बहुत से ग्रन्थ मिलते हैं । इसमें सबसे प्राचीन रचनाएँ सिद्धेश्वर परिड़ा की है । इसका समय 15वीं शताब्दी है, सिद्धेश्वर सारलादास के नाम से प्रसिद्ध है । इनकी "बिलंका रामायण" अत्यन्त प्रसिद्ध है । इसकी कथा लंका युद्ध के उपरान्त राम के अयोध्या गमन से प्रारम्भ होती है । इसमें सीता महात्म्य के रूप में उड़िया प्रदेश की नारी जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया गया है । [1]

मराठी में राम कथा :

मराठी में प्राचीनतम राम कथा पर आधारित भावर्थ रामायण है । जिसकी रचना " संत एकनाथ जी " ने 17वीं शताब्दी में की । एक नाथ कृत भावार्थ रामायण का मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण है । मराठी राम साहित्य के अन्तर्गत सीता स्वयंबर को लेकर अनेक रचनाएँ लिखी गईं । मराठी में कृष्ण कथा पर अधिक किन्तु राम कथा का कम प्रचार था । [2]

गुजराती में राम कथा :

गुजराती में राम कथा पर कम परन्तु कृष्ण कथा को आधार बनाकर बहुत अधिक लिखा गया है, फिर भी 14वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक छोटे-बड़े 50 कवियों ने राम काव्य की रचना की । सबसे पहले "असाईत कृत" राम लीला के पद मिलते हैं । जो 15वीं शताब्दी के प्रारम्भ के हैं । गुजराती के प्रसिद्ध वैष्णव " कवि भालण " द्वारा राम विवाह और राम बाल चरित नामक ग्रन्थों की रचना 15वीं शताब्दी में हुई । गुजरात के विशेष प्रभावशाली कृष्ण काव्य ही रहा । [3]

पंजाबी में राम कथा :

राम कथा पंजाब में मौखिक रूप में ही प्रचलित रही, वैसे 18वीं शताब्दी में राम काव्य सम्बन्धी कुछ रचनायें पंजाबी में प्राप्त होती है । इनमें से प्रसिद्ध रचना " श्री रामर्ल भाया आनन्द " दिलशाद की पंजाबी रामायण है ।

---

1. रामायण कथा विष्णुदास कविकृत पृ0- 22, संपादन- पं. लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी
2. -वही- पृ0- 22
3. -वही- पृ0- 22,23

यह रामायण बहुत ही प्रभावशाली है । इसमें रामकथा के अन्तरगत प्राप्त मानव जीवन के तत्वों को बड़े प्रभावशाली और लोकग्राही रूप में प्रकट किया गया है । 17वीं शताब्दी में "सोठी मेहरवान कृत रामायण एवं गोविन्द रामायण तथा "हनुमन्नाटक"रचे गये । §1§

काश्मीरी राम कथा :

काश्मीरी में भी रामकथा की रचनायें मिलती है, काश्मीरी में रामकथा के प्रसिद्ध रचनाकार "दिवाकर प्रकाश भट्ट" या "प्रकाश राम" द्वारा लिखित - "रामावतार चरित" या काश्मीरी रामायण है । इसकी रचना 19वीं शताब्दी में हुई थी । काश्मीरी रामायण में समस्त कथा शिव पार्वती संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है । इस कथा का मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण है । §2§

तमिल भाषा में राम कथा :

तमिल भाषा में राम कथा पर सर्वप्रथम ग्रन्थ " कम्ब रामायण " है, इसके रचयिता कवि चक्रवर्ती कम्बन है । उन्होंने 12वीं शताब्दी में अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ " कम्ब रामायण की रचना की थी । इसमें कई प्रसंग ऐसे भी है, जो रामायण में नहीं मिलते । "कम्ब" रामायण का अधिकांश आधार वाल्मीकि रामायण का "दाक्षिणात्य" पाठ है । कम्ब रामायण बड़ी सुन्दर और सरस रचना है । §3§

तेलगु में राम कथा :

इस भाषा में सर्वप्रथम रामायण "द्विपद" या "रंगनाथ रामायण" है । इसकी रचना 13वीं शताब्दी में हुई थी । रचयिता का नाम "गोनबुद्ध रेड्डी" है । यह गेय रामायण है, और प्राचीन होने के साथ ही अपने काव्य गुणों में बड़ी श्रेष्ठ कृति है। महाकवि गोनबुद्धा रेड्डी की कृति रंगनाथ रामायण तुलसीकृत रामायण के समान ही लोकप्रिय है, 16वीं शताब्दी के आस-पास "मोल्ला रामायण" लिखी गई, इसकी

---

1. रामायण कथा विष्णुदास कवि कृत, भूमिका-डॉ0 भगीरथ मिश्र-पृ0- 25
2. -वही- पृ0- 26
3. -वही-पृ0 - 27,28

इसकी रचना करने वाली "मोल्ला" नाम की कवियित्री थी, जो राम की अनन्य भक्त थी, इसकी रचना भक्ति की प्रेरणा से हुई है । इस ग्रन्थ की रचना करते समय कवियित्री को राम कथा के दृष्य स्वयं दृष्टिगोचर होते हैं, यह अत्यन्त सरस रचना है । §1§

कन्नड़ भाषा में राम कथा :

कन्नड़ भाषा में राम कथा काफी प्राचीन काल से मिलती है। 10वीं शताब्दी विक्रमीय से अन्तिम चरण में कन्नड़ के प्रसिद्ध कवि "पोन्न" द्वारा "भुवनैक्य रामाभ्युदय" नामक ग्रन्थ की रचना हुई, यह एक पौराणिक काव्य है, यह नैन कवि की रचना है । 12वीं शती के लगभग "नाग चन्द्र" नामक जैन कवि "रामचन्द्र चरित पुराण" महाभारत के आदर्श पर लिखी गई । इसे "पम्प" रामायण भी कहा जाता है, इसका आधार "विमल सूरि" कृत "पउम चरिउ" प्रधान रूप से है । 14वीं शती में कुमुदेन्दु मुनि नामक जैन कवि ने कुमुदेन्दु रामायण की रचना की, इसकी कथा जैन परम्परा में ढली है ।

17वीं शती में "तिम्मरस" नामक कवि ने "मार्कन्डेय रामायण" की रचना की, यह एक बड़ा ग्रन्थ है, इसमें मार्कन्डेय मुनि "युधिष्ठिर को राम कथा सुनाते है, इसका आधार महाभारत का रामोपाख्यान है, सम्पूर्ण रामचरित को लेकर लिखे गये काव्यों के अतिरिक्त कन्नड़ में रामचरित के अलावा अनेक खन्ड काव्यों की रचना हुई है, कन्नड़ के राम काव्य वाल्मीकि परम्परा पर ही नहीं बल्कि जैन राम कथाओं की परम्परा पर भी बहुत से काव्यों की रचना हुई है । §2§

मलयालम् में राम कथा :

मलयालम् साहित्य के अन्तगर्त प्राचीन काल से ही राम काव्य प्राप्त होता है, मलयालम् का प्राचीनतम ग्रन्थ राम काव्य सम्बन्धी ही है, इस ग्रन्थ की रचना "चीरामन §श्रीरामन§ द्वारा "राम चरितम्" लगभग 12वीं शती में लिखा गया, इसके बाद 14वीं शती में "कण्णश्य पणिक्कर" ने सम्पूर्ण राम कथा को लेकर - " कण्णश्श रामायण" की रचना की, इस ग्रन्थ का आधार वाल्मीकि रामायण है,

---

1. रामायण कथा विष्णुदास कविकृत- भूमिका - डॉ0 भगीरथ मिश्र, पृ0-29
2. -वही- पृ0- 29

15वीं शती में पूनम "नम्बूतिरी" ने "मणि प्रवाल" शैली में "रामायण चम्पू" की रचना की, संस्कृत मिश्रित मलयालम् में गद्य-पद्य-मय शैली का यह एक सुन्दर काव्य है, 16वीं शताब्दी में "अध्यात्म रामायण" की रचना हुई जो मलयालियों में सबसे अधिक लोकप्रिय ग्रन्थ है, इसके रचयिता महाकवि "लुंजत्तु ऐषु वच्छन्न" थे, इस प्रकार 17वीं शती में "अध्यान रामायण के आधार पर" "पाट्टी" शैली में सम्पूर्ण रामायण " कीर " के मुख से कहलाया गया है । जो "किलि पाट्टू" नाम से §कीर गीत§ प्रख्यात है, यह अत्यन्त लोकप्रिय है । 18वीं शती में राजा केरल वर्मा द्वारा रचित " केरल वर्मा रामायण " है । जो एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है, मलयालम में अध्यात्मिक एवं काव्यगत दोनों ही प्रकार के दृष्टिकोण स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं।§1§

भक्ति काव्य का पौराणिक आधार :- §आदि काल§

हिन्दी साहित्य का विकास संस्कृत साहित्य के विकास क्रम में आता है, अतएव संस्कृत साहित्य की परम्पराओं और प्रवृत्तियों से उनको अलग करके नहीं देखा जा सकता है । हिन्दी साहित्य के आदिकाल का साहित्य मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित है ।

§1§ जैन काव्य §2§ बौद्ध तथा नाथ पंथ का धार्मिक साहित्य और इसके अलावा तत्कालीन नरेशों को आधार बनाकर लिखा गया §2§ रासो काव्य । अतः तद्‌युगीन परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप उस समय की रचनाओं के नायक थे - महावीर बुद्ध तथा ऐतिहासिक वीर ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार ईसा की सातवीं आठवीं शताब्दी में ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम पर काव्य ग्रन्थ लिखने की प्रथा खूब चल पड़ी थी ।

कुछ इन परम्पराओं का प्रभाव और कुछ युग की परिस्थितियाँ इस प्रकार के साहित्य निर्माण का कारण बनी, लेकिन आदिकाल की मुख्य काव्य प्रवृत्ति पौराणिक न होते हुए भी पौराणिक कथाओं के प्रयोग के उदाहरण प्राप्त होते हैं ।

---

1. डॉ॰ भगीरथ मिश्र आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग §सागर विश्व विद्यालय§ अपनी भूमिका में । प्राकशन साहित्य भवन §प्रा0§लि0 इलाहाबाद कृते बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग सागर विश्व विद्यालय ।
2. "हिन्दी साहित्य का इतिहास" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ0- 68

"पृथ्वीराज रासो" यद्यपि वीर काव्य है, किन्तु इसमें भी रामकथा का वर्णन किया गया है । आदिकालीन बिपुल जैन काव्य में पुराण कथाओं के तथा पात्रों के माध्यम से जैन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना होता था ।

वस्तुतः हिन्दी साहित्य में पुराण कथाओं का आश्रय सबसे अधिक भक्ति काल में लिया गया है, भक्ति काल का साहित्य मुख्य रूप से धार्मिकता से परिपूर्ण था, और तत्कालीन धार्मिक चेतना को पुराणों से अलग करके नहीं देखा जा सकता है । सगुण और निर्गुण उपासना के मध्य से प्रवाहित होने वाली वैष्णव या भागवत धर्म की धारा । यद्यपि निर्गुण भक्त कवियों ने अपने आराध्य देव को सगुन व्यक्तित्व प्रदान नहीं किया था । फिर भी इस मार्ग के भक्ति का भावादर्श पुराणों के अनुसार था । मुख्य रूप से दो तरह से प्रवाहित होने वाली सगुन भक्ति की धारा पुराणों के दो अवतारों तथा उनके जीवन कथाओं को आधार बनाकर विकसित होती है - राम कथा पर आधारित राम भक्ति धारा और कृष्ण कथा पर आधारित कृष्ण भक्ति धारा ।

सगुन भक्ति की इस परम्परा को दक्षिण के अलवार भक्तों की साधना पद्धति से माना जाता है, इस भक्ति का मुख्य स्रोत्र पुराणों में ही मिलता है, दक्षिण के अतिरिक्त उत्तर पूर्व में भी भक्ति का जोर पुराणों में विष्णु के विभिन्न अवतारों के प्रति सगुन भक्ति धारा और निर्गुण भक्ति धारा पल्लवति हो चुकी थी । उत्तर भारत में पौराणिक धर्म का प्रचार पहले से ही पनप चुका था, और इस समय में शैव भक्ति का प्राधान्य था, कृष्णावतार और रामावतार की भी व्यापकता थी ।" (1)

विशेष कर पुराणों के अवतारवाद की धारणा ने भक्ति के विकास में विशेष रूप में पृष्ठ भूमि का काम किया है ।
" अवतारों से ही लीला का विस्तार होता है, जिसका श्रवण और मनन भक्ति का प्रधान साधन है । अवतारों के विविध लीलाओं के फलस्वरूप ही विविध नामों का उद्भव होता है । जिनका कीर्तन और जप भक्ति के लिए आवश्यक साधन है, यही कारण है कि मध्य युग के प्रायः सभी सम्प्रदायों ने किसी न किसी रूप में अवतारों की कल्पना अवश्य की है ।+

---

1. भागवत दर्शन, डॉ0 हरवंशलाल शर्मा, पृ0- 52

" शिव " के अनेक अवतारों की चर्चा मिलती है, गोरख नाथ तथा मत्स्येन्द्र नाथ को भी शिव का अवतार माना गया है । आगे चलकर अवतारवाद के घोर विरोधी " कबीर " को " ज्ञानी जी " का अवतार ही माने जाने लगा । वस्तुतः सगुण भक्ति के मार्ग के मूल में अवतार की कल्पना है । ॥1॥

भक्ति काव्य के अन्तगर्त जिन काव्य वस्तुओं का उपयोग किया गया है, वे पौराणिक ही हैं, विशेषतः कृष्ण भक्ति साहित्य का कथातत्व तथा विचार तत्व पूर्णतः पौराणिक है । कृष्ण भक्ति का सबसे व्यापक रूप में स्वीकार करने वाले हिन्दी के भक्ति कवि " सूरदास " का सम्पूर्ण काव्य - साहित्य "श्रीमद् भागवत पुराण" के अनुसार है । कृष्ण के प्रति नवधा भक्ति का स्वरूप, भक्ति के अन्तगर्त जीव, ब्रह्म एवं जगत सम्बन्धी धारणायें, कृष्ण से सम्बद्ध कथायें और कथा प्रसंग, कृष्ण की विविध लीलाएँ, कृष्ण कथा के विविध पात्रों का निरूपण, पुराणों को उपजीव्य ग्रन्थ मानकर किया गया है, वस्तुतः भक्ति काल में कृष्ण का जो लीला अवतारी रूप विकसित हुआ । वह " महा भारत " के अनुसार न होकर " श्रीमद् भागवत पुराण " तथा विष्णु पुराण के अनुसार है । हिन्दी में विकसित राम कथा का आधार कहीं वाल्मीकि रामायण कहीं अध्यात्म रामायण और कहीं आनन्द रामायण या अन्य ग्रन्थ है । किन्तु राम कथा विभिन्न पुराणों में प्राप्त है । राम कृष्ण के अतिरिक्त विष्णु के विविध अवतारों का वर्णन तथा उनके प्रति श्रद्धा एवं भक्ति का प्रदर्शन भक्ति काल के लगभग सभी कवियों ने किया है, जिसके लिए उन्होंने पुराणों का आधार ग्रहण किया है ।

पुराणों में जिस नवधा भक्ति का उल्लेख किया गया है, उसमें भक्ति के नौ ॥9॥ रूपों में श्रवण, कीर्तन, या आराध्यदेव के गुण कथन का भी विधान है, एक ओर अपने आराध्य देव के प्रति प्रत्यक्ष रूप में आत्म-निवेदन करना, भक्ति प्रदर्शन का एक रूप है, वहाँ दूसरी ओर उनके गुण कथन और चरित का वर्णन भी भक्ति भावना को व्यक्त करने का मुख्य साधन है । इसीलिए उस समय के भक्त कवियो ने, कृष्ण राम तथा अनेक देवी - देवताओं के चरित का वर्णन भी अपनी लेखनी के द्वारा किया है । अतः जहाँ एक ओर पौराणिक नायक उनके काव्य के विषय बने, वहाँ दूसरी ओर चरितगान् के लिए उनके जीवन से सम्बद्ध कथाओं का उपयोग भी होने लगा ।

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी - पृ०- 92

" तुलसीदास " ने "रामचरित मानस" की रचना राम चरित वर्णन की दृष्टि से ही की थी, "सूरदास" ने भी कृष्ण के जीवन से सम्बद्ध कथाओं का वर्णन कृष्ण लीलाओं अथवा उनके गुणों का गान करने की भावना को दृष्टि दी थी, भक्ति के विभिन्न साधनों के रूप में "गुण कथन" की परम्परा के कारण एक ओर देवी देवताओं के प्रति स्तुति मूलक साहित्य की रचना हुई, तथा दूसरी ओर उनसे सम्बद्ध पौराणिक कथायें भी प्रबन्ध तथा मुक्तक काव्य का विषय बनी।

इस युग की भक्ति में राम और कृष्ण को विभिन्न भाव धाराओं में स्वीकार किया गया है, इसलिए इनके दो रूप सामने आते हैं । राम भक्ति शाखा में राम के गरिमामय, मर्यादा पुरुषोत्तम् रूप की अवतारणा हुई - जो प्रबन्ध काव्य के अधिक अनुकूल था । अतः इस युग के राम कथा पर आधारित काव्य साहित्य में कथात्मक अंश अपेक्षाकृत अधिक है, तुलसी के "राम चरित मानस" तथा "केशवदास" की "राम चन्द्रिका" में राम जन्म से लेकर राम राज्याभिषेक या उसके बाद की कथा को क्रमबद्ध रूप में विस्तार से लिया गया है । (1)

यद्यपि भक्ति काल में कृष्ण और राम भक्ति से सम्बन्धित विपुल काव्य साहित्य की रचना हुई है, किन्तु यह भक्ति रामायण तथा पुराण के इन दो मुख्य नायकों से ही सम्बद्ध नहीं है, बल्कि भक्ति के इस उन्मेषशाली युग में अन्य पौराणिक देवताओं के प्रति भी श्रद्धा भक्ति के प्रदर्शन के लिए उनसे सम्बन्धित पौराणिक काव्य की रचना हुई है । (2)

अतः पुराणों के विभिन्न भक्तों प्रहलाद, ध्रुव, हनुमान, के चरित्रमान की प्रथा इस युग में प्राप्त होती है । जन गोपाल का "प्रहलाद चरित्र" सहजराम का "प्रहलाद चरित्र" परमानन्द दास विरचित पर ध्रुव चरित्र", सुन्दर दास की "ध्रुवलीला" इस प्रकार की रचनायें हैं । जिनमें चरितमान के लिए पुराणों को आधार बनाया गया है । राम भक्त हनुमान से अनेक रचनायें इस युग में लिखी गई हैं । यथा "हृदय राम का" का "हनुमान्नाटक" पुरुषोत्तम कवि का "हनुदूत" मान कवि का "पंचमुखी"हनुमंत पच्चीसी, मनियार सिंह कृत "हनुमान छब्बीसी" आदि ।(3)

---

1. आधुनिक हिन्दी काव्य और पुराण कथा - डॉ० मालती सिंह,पृ०-12,13, हिन्दी विभाग,इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद । प्रकाशन- लोक भारती 15 ए, महात्मागाँधी मार्ग, इलाहाबाद-1
2. आधुनिक हिन्दी काव्य और पुराण कथा - डॉ० मालती सिंह- पृ०-14
3. आधुनिक हिन्दी काव्य और पुराण कथा - डॉ० मालती सिंह-पृ०- 15

.....31/-

रीति कालीन काव्य का विकास :

भक्ति कालीन काव्य में धार्मिक भावना से जुड़ी हुई जिन पुराण कथाओं का विकास जिन रूपों में हुआ था । वह रीतिकाल में समाप्त नहीं हुआ, बल्कि उस युग की मूल प्रवृत्ति श्रृंगारिकता ने पुराण कथाओं की आत्मा तथा उसके बाह्य स्वरूप एवं पौराणिक पात्रों के चरित्र में भी अन्तर उपस्थित कर दिया, भक्ति की उदात्त भावना से विकसित हुई, श्रृंगार पूर्ण दृष्टि कोण के लिए रीतिकालीन परिस्थितियाँ भी उत्तरदायी थी । यह भारतीय इतिहास में मुगल शासन का संध्याकाल था, जो औरंगजेब की शासन नीति में उसके साम्राज्य के पतन की सभी सम्भावनायें सन्निहित थीं । औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् ही केन्द्रीय मुगल शासन छिन्न - भिन्न होने लगा था, ऐसी स्थिति में उस युग के जन जीवन में गृह युद्धों के कारण आतंक छाया रहता था, हिन्दू जनता तो युगों से परतन्त्र थी, यही कारण है, कि राजनैतिक विवशता एवं आतंकपूर्ण वातावरण के परिणाम स्वरूप उस समय के जनजीवन में जिस अनिश्चितता की भावना ने घर कर लिया था, उसने तत्कालीन जनता को बौद्धिक तथा नैतिक दृष्टि से पतनोन्मुख बना दिया था । धर्म उसके लिए पावन अनुभूति का विषय नहीं था । इस समय के कवियों ने देवी - देवताओं के स्थान पर लौकिक भूपालों का आश्रय - ग्रहण किया और उनके मनोरंजन के लिए काव्य रचना करते थे । ये राजा महराजा इस गुलामी के वातावरण में स्वयं स्वप्नहीन हो गये थे । उन्होंने अपने स्वाभिमान हीन जीवन को भुला दिया था, और विलास पूर्ण जीवन जी रहे थे । इन नरेशों के मनोरंजन के लिए जिस प्रकार के साहित्य की रचना की गई है, वह ऐहिकता मूलक थी, इस समय का मुख्य विषय श्रृंगार, रस, संयोग, वियोग, दोनों ही पक्ष, नायिका भेद, नखशिख वर्णन, षट्ऋतु वर्णन, अष्टयाम, वर्णन, तथा काव्य शास्त्र के विभिन्न अंगों और उपांगों का विवेचन था । इन विविध काव्य वस्तुओं के वर्णन में श्रृंगारिकता ही एक मात्र उस समय की मुख्य प्रवृत्ति थी ।

" मध्य कालीन साहित्य को श्रृंगार रस के उत्थान और पतन का इतिहास भी कह सकते हैं, जिस प्रकार विभिन्न जलाशयों में संचित जल सूर्य किरणों द्वारा क्रमशः खिंचता हुआ आकाश की ओर जाता है, वहाँ समुज्जवल बन बादलों का रूप धारण कर लेता है, उसी प्रकार लौकिक साहित्य का श्रृंगारिक रस

......32/-

भी अक्सर उच्च आध्यात्मिक स्तर पर पहुँच गया, एक बार अधिक विशुद्ध भी बन गया, किन्तु फिर अन्त में लौट कर उसे मलिन तथा पंकिल भी हो जाना पड़ा और इसमें फँस जाने के कारण अवतारी राधा कृष्ण तथा सीता राम की मिट्टी पलीद हो गई । ﴾1﴿

जैसा कि प्रो० रामेश्वर शुक्ल "अंचल" का कहना है, कि हिन्दी रीतिकालीन साहित्य की सामाजिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करने से हमें मालूम होता है, कि यह काल बड़ी अव्यवस्था का युग था, मुगल साम्राज्य के वैभव का रथ अस्ताचल की ओर तीव्र गति से बढ़ रहा था, सारा देश युद्ध और विप्लव का क्षेत्र बना हुआ था । "औरंगजेब" के बाद गिरते हुए मुगल साम्राज्य के विशाल भवन को सँभालने वाला कोई दृढ़ स्तम्भ न था । नादिर शाह और अब्दाली के आक्रमणों ने इस नाश और अव्यवस्था को अधिक गति प्रदान की । सामन्तशाही जर्जर थी, पर जनता को दलित किये जा रही थी, औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता से हिन्दू दुर्बल हो गये थे, और मुसलमान विलास में अपनी शक्ति नष्ट कर रहे थे । सामान्य जनता की दशा असन्तोषजनक थी । कृषि वर्ग सोने की फसल पैदा करके भी भूखा रहता था । यह सारा काल मुगल राज्य के क्रमिक ह्रास, हिन्दू शक्तियों के उत्थान और पतन तथा अंग्रेज शक्ति के क्रमिक विकास का इतिहास है । आये दिन युद्धों के नीचे निरीह भारतीय जनता पददलित हो रही थी, अराजकता का युग था । सम्पूर्ण देश में ठगों, चोरों, डाकुओं और बुद्धिजीवी वर्गों का बोलबाला था । समाज की आत्मा संकुचित हो गई थी, वह आत्मनिष्ठ और रूढ़िग्रस्त न थी । राष्ट्र की नवचेतना का मार्ग अवरूद्ध था । ऐसी परिस्थिति में साहित्य सर्जना नवीन एवं जनमंगल कारी पथ का अन्वेषण न कर सकी । "﴾2﴿

रीतिकालीन, इस पृष्ठभूमि का अनुशीलन कर जब हम उस समय की काव्य धारा पर विचार करते हैं, तो इस काल में आठ ﴾8﴿ प्रधान रचनायें मिलती हैं ।

---

1. रीति कालीन श्रृंगारिक प्रवृत्ति तथा नव निबन्ध - डॉ० परशुराम चतुर्वेदी पृ०- 24
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य राम चन्द्र शुक्ल - पृ०- 178

1. श्रृंगार रस की रचनाएँ लिखने वाले कवि रसखान, घनानन्द, ठाकुर आदि ।
2. श्रृंगार की लक्षण बद्ध रचनाएँ रचने वाले कवि - पद्माकर, वेणी आदि ।
3. प्रबन्ध काव्य :- 1. चन्द्र शेखर का हमीर हठ,
   2. गोरे लाल का छत्र प्रकाश
   3. जोध राज का हम्मीर रासो,
   4. सुदन का सुजान चरित्र आदि ।
4. वर्णनात्मक प्रबन्ध : दान लीला, मान लीला, जल बिहार, मृगया, झूला, होली जन्मोत्सव, विवाहदि पर {लगभग रीति काल के सभी प्रमुख कवि ।
5. नीति और ज्ञान के पद्य : वृन्द, गिरिधर, घाघ, बैताल, भगवत्, रसिक,
6. भक्ति - काव्य महाराज विश्वनाथ सिंह {30 ग्रन्थ}
   भक्तिबर नागरीदास {50 ग्रन्थ}
7. वीर रस की रचनाएँ : लाल का "छत्र प्रकाश" भूषण का शिवराज, भूषण आदि।
8. गद्य-ग्रन्थ - वैष्णव वार्ताएँ - गोसाइयों द्वारा । {1}

डॉ० नगेन्द्र का कथन है, कि "रीति काव्य में दो प्रवृत्तियाँ अभिन्न रूप से गुंथी हुई मिलती है, {1} रीति निरूपण अथवा "आचार्यत्व और श्रृंगारिकता" इस तरह रीति निरूपण की प्रवृत्ति व श्रृंगारिकता ही तत्कालीन काव्य - धारा में विशेष रूप से दीख पड़ती है । जब हम समग्र रूप में विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि "डॉ० भगीरथ मिश्र" ने रीति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में मत व्यक्त करते हुए यही कहा है कि "पहली प्रवृत्ति तो यह है कि इस समय का अधिकांश काव्य राजाश्रय में लिखा गया, जिससे जहाँ एक ओर कवि प्रतिभा को निखार और कला को संरक्षण मिला, वहाँ दूसरी ओर झूठी प्रशंसापूर्ण तथा श्रृंगार और विलास का खुल कर चित्रण भी हुआ है । इन गुणों और दोषों में कोई भी नगण्य नहीं है । प्रवृत्ति अलंकृत काव्य लिखने की है । {2}

डॉ० भगीरथ मिश्र का कथन है, कि "औसत साहित्यिक चेतना इस युग की अन्य युगों से अधिक प्रबुद्ध थी, जन साधरणों के घरों में काव्य के ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ उस समय मिल सकती थी । मुद्राण यन्त्रों का विकास न होने पर भी अधिकांश निजी अथवा राज-पुस्तकालयों में सुरक्षित रहीं, यह इस युग की कला एवं

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - पृ० - 180,181
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - पृ० - 181

साहित्य प्रियता का प्रमाण है । अतः अनेक दृष्टियों से इस युग के काव्य की अपनी महत्ता व विशिष्टता है "।§1§

रीति कालीन कविता के उक्त सम्यक् परिचय के आधार पर यहाँ यह कहा जा सकता है कि भले ही रीतिकाल में लक्षण ग्रन्थ ही अधिक संख्या में लिखे गये हों, पर कुछ अंशों में कविता के विविध विस्तार की दृष्टि से हिन्दी साहित्य का रीति युग सब से समृद्ध युग कहा जा सकता है ।

राम तथा सीता का वर्णन करते समय इन कवियों ने तत्कालीन विलासिता पूर्ण जीवन का विशेष आरोपण किया है । राम उस समय के विलासी, ऐयाश नरेशों अथवा सामन्तों के सदृश प्रतीत होते हैं जिनके जीवन का लक्ष्य भोग विलास है राज्य का संचालन नहीं, राम के साकेत धाम का वर्णन भी मध्य कालीन मुगल शासकों के अन्तःपुर के सदृश है, जहाँ विभिन्न सखियाँ राम की सेवा में खड़ी हैं । कहीं गजमुक्ता की झालर लटक रही है, तो कहीं झीनें कपड़े का पर्दा पड़ा है तो कहीं मखमल विछा है ।

बाहिर महलन की रुचि काई । अद्‌भुत अकथ कह हूँ किमि गाई ।।
भीतर कुंज निकुंज अनुपा । बने खचित मणि विविध सरूपा ।।
बिछे पलंग बहु धले हिंडोरे । कुन्ज कुंज प्रति भोद न कोरे ।
चौवारिनि चित्राम सुहाए । मणि माणिक में जाय न गाये ।।
परदनि की अनुमान रचनाई । देखत बनै बरबिा नहीं जाई ।
मखमला मृदु पाट पटोरे । विछे लेत चित बरबस चोरे ।।
जीना ललित न जात बखाने । लधु विशाल सुन्दर सो पाने । §2§

इस विलासिता पूर्ण वातावरण में राम तथा सीता के विविध प्रेम क्रीडाओं के वर्णन में नवीन प्रसंगों की उद्‌भावना होती है । विशेषतः कृष्ण जीवन से सम्बद्ध विविध विहार लीलाओं को भी राम के साथ संयुक्त किया गया है । राम के विहार लीलाओं के वर्णन के समय जल विहार, वन विहार, उपवन विहार, हिंडोला, फाग, यहाँ तक की राम - सीता के चौपड़ खेलने का वर्णन भी प्राप्त होता है, राम तथा कनक भवन वासिनी सीता की विभिन्न सखियों के साथ "रास" के वर्णन का विशेष प्रचलन इस सम्प्रदाय के कवियों में था ।

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - पृ0- 181
2. प्रेमलता जी, "राम भक्ति साहित्य में मधुर उपासना" पृ0- 347

.....35/-

" श्री कृपा निवास " ने रास पद्धति में "श्रीमद भागवत" पुराण में वर्णित रास के आधार पर "महारास" का वर्णन किया है, कृष्ण की विविध लीलाओं का अनुकरण इस काव्य में इतना अधिक हुआ है, कि राम भी पनघट पर अयोध्या की नारियों को छेड़ते चलते हैं ।

पनघट पर हमको मोहि लई दशरथ के प्यारे साँवरिया ।
जल भरत धरत कटि करक गई सरेखत सारी सरकि गई
निरखत छवि । §1§

राम के सम्बद्ध दान लीला का वर्णन देखिए :

विपिन प्रमोद सो बोरि महा है आवो दही लै बड़ी अलबेली ।
मानत ना डर काह की ने कहु पाई अचानक आजु अकेली ।।
दीजो हमें करिनेग तुहै भावतो चित की चोर हौं रूप नवेली । §2§

इस प्रकार रसिक भक्त कवियों ने राम और सीता के . युगल केलि वर्णन के समय किसी प्रकार के संकोच का अनुभव नहीं किया है, और प्रेम का कामशास्त्रीय स्तर पर अमर्यादित वर्णन किया है ।

जब लाडिली कटि लचकि मचकति झुकति पिय की वोर,
तब जात बलि लाड़लौ गति होत चन्द चकोर ।।
जब परसि बात उरोज अंचल उड़त सिय सकुचाय ।
पुनि हेर पिय तन नमित चरवरहि रसन दसन दबाय ।।
लखि हाव पिय उर भाव सरसत चाव चित उमगात ।
सो निरखि दम्पति सुख सकस अलि मुदित उमगी गात ।। §3§

यद्यपि इस युग में प्रचलित अनेक कार्य - प्रणालियों को भी कृष्ण जीवन के साथ सम्बद्ध करके देखा गया है, किन्तु कृष्ण के पौराणिक पक्ष की रक्षा वहाँ पूर्ण रूपेण हुई है । उस समय के भक्त कवियों द्वारा वर्णित दानलीला, चीर हरण, लीला, रास लीला आदि का विशेष अध्यात्मिक अर्थ भी था और इसके साथ ही रीति कालीन कवियों ने भक्ति युग की अन्तर्मुखी चेतना से दूर हटकर एकान्त भाव से

1. श्याम सखे - पृ0- 370
2. राम सखे - पृ0 - 323
3. रसिक कली आन्दोलन रहस्य दीपिका, राम भक्ति साहित्य में मधुर उपासना- पृ0- 239

श्रृंगार के लौकिक धरातल पर अपनी काव्य चेतना का सम्यक् प्रसार करने और उसे यथा शक्त प्रेमविष्णु बनाने में जितना अधिक योग दिया है, वह अन्यत्र दुलर्भ है । रीति कवियों के उद्देश्य के सम्बन्ध में अधिक अभिज्ञता प्राप्त करने के लिए उनकी रचनाओं का साक्ष्य विशेष उपादेय हो सकता है, क्यों कि इन रचनाओं में उनके लक्ष्य एवं उद्देश्य का जितना जीवित सत्य मुखरित हुआ है, वह अन्य ऐतिहासिक साक्ष्यों की तुलना में अधिक पुष्ट एवं सबल है, इससे सम्बन्धित कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है ।

1. रसिक चकोरन को सदा, सूझि परै रस पन्थ,
   ताते रच्यो कवीन्द्र यह, रस चन्द्रोदय ग्रन्थ ।। (1)

2. जो कोऊ रस रीति को, समुझयौ चाहै सार ।
   पढ़ै बिहारी सतसई, कविता को सिंगार ।। (2)

3. जान्यो चहै जु, थोरे ही रस कवित्त को वंश ।
   तिन रसिकन्ह के हेतु, यह कीन्हौं रस सारांश ।। (3)

इन पंक्तियों से यह बात स्पष्ट हो जाती है, कि इन कवियों का मुख्य उद्देश्य श्रृंगार साधक रसिक चकोरों को रस रीति - श्रृंगार रस का मार्ग प्रशस्त करना था। ऐसे रसिक कवियों के सन्दर्भ में " डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी अपने विचार व्यक्त किये हैं । उन्होने वात्स्यायन के "कामसूत्र" में उल्लिखित "रसिक" और "नागरिक" शब्द का बहुविध विश्लेषण किया है । डॉ० द्विवेदी का अनुमान है, कि " वात्स्यायन" का बताया हुआ "नागरिक" या "रसिक" अत्यन्त समृद्ध विलासी हुआ करता था । उसके पास प्रचुर सम्पत्ति पर्याप्त अवकाश अकल्पनीय निश्चिन्तता होती थी । (4)

इसके साथ ही हम आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य पर दृष्टि डालते हैं तो हमारे सामने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का काल काव्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिखाई

---

1. उदय नाथ कवीन्द्र : रस चन्द्रोदय और रस वृष्टि - पृ0-1 छन्द संख्या-3 सन्-1982 में नवल किशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित ।
2. बिहारी सतसई- टीकाकार, कृष्ण कवि - पृ0- 260 नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित ।
3. भिखारी दास ग्रन्थावली (रस सारांश) प्रथम खन्ड, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, प्रथम संस्करण छन्द संख्या -5
4. (हिन्दी साहित्य की भूमिका) डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी,पाँचवा सं॰पृ0-124

देता है । खास कर भारतेन्दु काल के कवि पर मानसिक संस्कार अतीत की काव्य निधि का था, किन्तु उस पर वर्तमान की सामाजिक यथार्थता का भी पुट था । सामाजिक यथार्थ ऐसे ज्वलन्त में उनके दृष्टिपथ में आया कि वे सहसा अतीत की ओर न झाँक सकें ।

अलोच्य काल की उषा - बेला में पंडित श्रीधर पाठक देवी प्रसाद "पूर्ण" और श्री अवधवासी सीता राम "भूप" ने प्राक्तोनोमुख प्रवृत्तियाँ दिखाईं "भूप जी" ने "रघुवंश" की पौराणिक कथा में हाथ लगाया और उसे ब्रजभाषा में गाया । श्रीधर पाठक ने कालिदास के "ऋतु संहार" को लिया और "पूर्ण" जी "मेघदूत" काव्य को । ये सब"ब्रजवाणी" की निधियाँ हैं । सेठ कन्हैया लाल पोद्दार ने श्रीमद भागवत् के सुन्दर अंशों का "पंचगीत" और "गोपी गीत" नाम से अनुवाद करके इसी परम्परा में कड़ी जोड़ी । स्वयं आचार्य द्विवेदी ने "कुमार संभव" और "मेघदूत" के आधार पर " कुमार सम्भवसार " और हिन्दी में "मेघदूत" की रचना की । ﴾1﴿

इन प्रवृत्तियों का भाव - प्रभाव कवि मानस पर पड़ रहा था, और कवि गण उधर प्रवृत्त हो रहे थे, पौराणिक आख्यान पूर्ण कविता का युग के सिद्ध चित्रकार राजा "रवि वर्मा" आदि की चित्रकला से भी तात्कालीक सम्बन्ध देखा जा सकता है, सन् 1900 से ही श्री श्याम सुन्दर दास द्वारा सम्पादित "सरस्वती" में देश के सिद्ध चित्रकार "राजा रवि वर्मा" की कला प्रदर्शित हुई, राजा रवि वर्मा के पहले किसी भारतवासी शिल्पी ने प्राचीन संस्कृत साहित्य में वर्णित नायक-नायिकाओं तथा प्रसिद्ध घटनाओं का तैलचित्र नहीं बनाया था । "

द्विवेदी जी अपने पौराणिक तत्त्व प्रेम के कारण ही इस चित्र कला की ओर आकृष्ट हुए थे, खड़ी वोली में स्वयं द्विवेदी जी ने रंभा, कुमुद सुन्दरी महाश्वेता उषा स्वप्न, गौरी गंगा, भीष्म, प्रियम्बदा इंदिरा पर कविताओं की रचना की।

वैसे "मैथिली शरण गुप्त" ने पौराणिक चित्रों के द्वारा निस्सन्देह पौराणिक आख्यान काव्य की आधार शिला की स्थापना की । "श्री मैथिली शरण गुप्त ने "उत्तरा से अभिमन्यु की विदा जनवरी 1908 चित्र पर काव्य की रचना की, एक उदाहरण देखें :-

---

1. हिन्दी कविता में युगान्तर - प्रो0 सुधीन्द्र - पृ0- 169

हे विज्ञ दर्शक देखिए है दृश्य क्या अद्भुत अहा ।
यह वीर - करुणा - सम्मिलन कैसा विलक्षण हो रहा ।। ‖1‖

इस तरह लिखते हुए उन्होने पाठको को आश्वासन भी दिया था ।

अभिमन्यु का यह चरित आदरणीय प्रायः है सभी ।
जो हो सका तो युद्ध भी इसका सुनाऊँगा कभी ।। ‖2‖

यह भूमिका थी "जयद्रथ वध" जैसे सुन्दर पौराणिक खन्ड काव्य की, जिसमें पौराणिक कथा का सम्मोहन इस प्रकार कार्यान्वित हुआ । इसके बाद अभिमन्यु से सम्बन्धित चित्रों पर लिखी और भी कविताओं का समावेश गुप्त जी के " जयद्रथ वध" काव्य में हुआ । "शकुन्तला" काव्य के खन्ड भी इन्ही कविताओं में है, दुष्यन्त के प्रति शकुन्तला का पत्र ‖सरस्वती - नवम्बर 1908 में शकुन्तला - पत्र लेखन चित्र पर लिखी गई ‖कविता‖ भी गुप्त जी की "शकुन्तला" कृति में ज्यों का त्यों सुरक्षित है । यह सब पौराणिक आख्यानक काव्यों के रूप में प्रकाश में आया । राजा रवि वर्मा और "ब्रजभूषण राय" चौधरी जैसे - प्रसिद्ध चित्रकारों ने पौराणिक चित्रों पर द्विवेदी जी के आदेशानुरोध या आग्रह-अनुग्रह से मैथिली शरण गुप्त जी ने लम्बी आख्यानात्मक कवितायें लिखीं, उनमें उनके पौराणिक काव्य प्रसादों का शिलान्यास था । ‖3‖

स्वतन्त्र रूप से भी कविगण् अब पौराणिक आख्यानों की ओर प्रवृत्त हुए "सरस्वती" के अतिरिक्त "इन्दु" "मर्यादा" आदि प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठों में इस काल में राशि - राशि पौराणिक आख्यानक कवितायें प्रकाशित हुई है । सुकुमार बालकों के संस्कार के लिए पुष्कल काव्य निधि इस प्रकार हिन्दी में प्रस्तुत हो गयी । कविवर शंकर ‖रामलीला‖ पंडित गिरिधर शर्मा ‖राजकुमारी सावित्री‖ अंशुमती, च्यवन-पत्नी सुकन्या, मैथिली शरण गुप्त ‖आत्मोतगर्ड‖ बन्धु - विरोध, हरिऔध ‖ रूक्मिणी संदेश‖ वीखर सौमित्र, जयशंकर प्रसाद ‖भरत‖ कामता प्रसाद ‖परशुराम‖ रूप नारायण पान्डे ‖राजा रन्तिदेव, दानी दधीचि‖ ने श्रेष्ठ पौराणिक कवितायें लिखीं । इन पौराणिक आख्यानों में कई सुन्दर प्रबन्ध-काव्य है, जिनका कविता के विकास में निश्चित स्थान है । ‖4‖

---

1. हिन्दी कविता में युगान्तर - प्रो0 सुधीन्द्र -पृ0- 172
   श्री सियाराम शरण गुप्त के एक हस्तलिखित पत्र से ।
2. - वही -
3. हिन्दी कविता में युगान्तर - प्रो0 सुधीन्द्र - पृ0- 173
4. -वही- पृ0- 174

इसके अतिरिक्त मैथिली शरण गुप्त और हरिऔध को सबसे अधिक सफलता उनकी काव्य कृति "साकेत" और"प्रिय प्रवास" में मिली, यह दोनों काव्य रचनायें पुराण कथा पर आधारित है । किन्तु इसमें नैतिक बुद्धिवाद और आदर्शवाद की स्पष्ट मुद्रा है, भागवत के कृष्ण के चरित को "प्रिय प्रवास" में मानव रूप रेखा अवश्य दी गई है, किन्तु उन्हे ब्रह्मा, भगवान या ईश्वर नहीं, किन्तु एक लोक सेवी, लोक संग्रही, कर्म योगी, महा पुरूष के रूप में प्रस्तुत किया गया है । अतः जो महा पुरूष है, उसका अवतार होना निश्चित है । पौराणिक रूढ़ धारणा के विरूद्ध यह परिवर्तनकारी अनुष्ठान नवयुग में अभिनन्दनीय ही हुआ, आर्य समाज के बुद्धिवाद ने ही अवतारवाद की यह नई बौद्धिक व्याख्या की वस्तुतः "अवतारवाद" का इससे अधिक उपयुक्त आधार है ।

यदा - यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानां सृजाम्यहम् ।
परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापना र्थाय संभवामि युगे - युगे ।। §1§

कवि ने बुद्धिवाद तर्क की पुष्टि के लिए "कृष्ण लीला" की अंगुली पर गोवर्द्धन धारण, काली नाग मर्दन जैसी अति प्राकृत घटनाओं का बौद्धिक निरूपण किया है, "कालियादमन" में कृष्ण की यह छबि दिखाई गई है । एक उद्धरण दृष्टव्य है :-

अहीश को नाथ विचित्र रीति से
स्वहस्त में थे वर रज्जु को लिये ।
बजा रहे थे मुरली मुहु र्मुहुः ।
प्रबोधिनी मुग्धकरी विमोहिनी । §2§

खड़ी बोली के सन्दर्भ में बड़े साहस के साथ "हरिऔध" ने "प्रिय प्रवास" को अपनी काव्य की भाषा बनाया । और राधा-कृष्ण के मिथकों को मध्यकालीन बोध से काफी हद तक मुक्त कर के एक बौद्धिक धरातल देने की चेष्टा की । वैसे द्विवेदी युग में बौद्धिकता, आदर्शवादी तत्वों में लिप्त थी, किन्तु इसने रूढ़िग्रस्त सामंती परम्पराओं का डटकर विरोध किया, वैसे द्विवेदी युग ने मानवतावाद का ही

---

1. हिन्दी कविता में युगान्तर - प्रो0 सुधीन्द्र - पृ0-175§गीता- 4,6§
2. प्रिय प्रवास एकादर्श सर्ग - 41 "हरिऔध"

चुनाव किया था, और इसके साथ ही सामाजिक सुधार और आदर्शवाद की प्रतिष्ठा की । भारतीय समाज के राजनैतिक, सांस्कृतिक जीवन में आदर्शवाद की एक भूमिका थी । समाज में एक नई संस्कृति की आवश्यकताओं के तहत राजनैतिक स्वाधीनता और नारी स्वाधीनता दोनों की चर्चा बड़ी गर्म थी । अंग्रेजी साम्राज्यवाद का अत्याचारी स्वरूप अंकित होने लगा था । और नारी ने घर से निकल जैसे - ही लोक सेवा की तरफ कदम बढ़ाया, बनी बनाई परम्पराओं पर पानी फिर गया । नारी का दो स्वरूप था, एक स्वरूप था पश्चिम से मिलता जुलता, जिसका राष्ट्रीय आदर्शवादियों ने उग्र विरोध किया, एक दूसरा स्वरूप था, नैतिक परम्पराओं से पोषित आदर्श भारतीय नारी का, जो द्विवेदी युग के सुधारवादी क्षेत्रों की कल्पना थी । सम्पन्न घर की महिलायें दीन-दुखियों की सेवा में निकल रही थी, "प्रिय प्रवास" की राधा कुछ ऐसे ही संकेत करती है ।

कृष्ण के मिथक को ऐसे संस्कारों के बीच से बाहर निकालना, जिनमें "सुमिरन के बहाने रीझि की कविताई" का बोलबाला था, अथवा इससे भी पहले लीला और प्रेम की श्रृंगारिकता का मध्यकालीन सौंदर्यबोध हावी था, यह कोई कठिन काम नहीं था, "महा भारत" ने कृष्ण को युद्ध भूमि के अलावा संत्रस्त मानवीय जीवन की आस्था के एक जीवित प्रतीक के रूप में जो स्वीकृति दी थी, वह मध्य काल में समाप्त हो गयी थी । जब कि भक्ति काल में कविता व्यापक जन लगाव रखती थी, क्योंकि स्वतंत्रता के मूल्यों को पहचानने की कोशिश कृष्ण राम दोनों के भक्त कवियों ने की थी, श्रृंगार काल की कविता सामंतवादी आधरण का प्रतीक बनकर रह गई, इसमें लोक पक्ष का अभाव था । इसी कारण से "प्रिय प्रवास" को अपनी परम्परा में बड़ा संघर्ष करना पड़ा । खड़ी बोली को माध्यम बना लेने के बावजूद रूढ़िग्रस्त परम्परा के सम्पूर्ण वेग को रोकने की ताकत कविता में नहीं आ पायी थी । श्रृंगार काल के बहुत बड़े हिस्से को साफ सुथरा होकर और नये मूल्यों की स्थापना के साथ "प्रिय प्रवास" को काफी हद तक सफलता मिली । कृष्ण मिथक में समकालीन जीवन की आदर्शवादी भावना भी प्रविष्ट हुई ।

"हरिऔध" ने "कालियानाग" के माध्यम से देश में बढ़ते अत्याचारों की ओर संकेत किया है । अतिवृष्टि से त्रस्त जन साधारण की मुक्ति के लिए अंगुली पर गोर्वधन पर्वत रखने वाले कठिन श्रम तथा क्लांतिहीन धैर्य के प्रतीक कृष्ण की सेवा

भावना को उभारा "कालिया नाग" ब्रिटिश अत्याचारों का प्रतीक था, ब्रिटिश शासन का दमन करने की ही नहीं, उसे उखाड़ फेकने की समस्या राजनीतिक सांस्कृतिक स्तर पर थी, पर स्वतन्त्रता के मूल्यों के प्रति " हरिऔध " उतने सचेत नहीं थे, " कालिया दमन " के प्रसंग में वे सिर्फ इतना ही कह पाते हैं ।

स्वजाति की देख अतीव दुर्दशा
विगर्हणा देख मनुष्य मात्रा की
हितेषणा से निज जन्म भूमि की
अपार आवेश हुआ ब्रजेश को ।। §1§

नाग को कवि ने जातीय दुर्दशा के रूप में अंकित किया तथा इस पर नियंत्रण पाने के लिए युक्ति, अदम्य शक्ति एवं धैर्य की जरूरत बतायी, मिथकीय संकेतों में अपनी आदर्शवादी छट पटाहट उन्होंने इस प्रकार व्यक्त की ।

विपत्ति से रक्षण सर्प भूत का,
सहाय होना असहाय जीव का
उबारना संकट से स्वजाति का
मनुष्य का सर्व प्रधान धर्म है । §2§

इसमें कृष्ण को जन नेता के रूप में स्थापित किया है, राष्ट्रीय सामाजिक संकट कई फनों का अति ही भयावना रूप था ।

" हरिऔध परतंत्र भारत के कवि थे, और इनका महत्व इस बात में है, कि उन्होंने कृष्ण राधा का मिथक परम्परागत तरीके से भिन्न रूपों में रखा, राधा विश्व के कष्टों के भीतर ही अपने प्रियतम की पुकार सुनने लगती है, एक आदर्शवादी धरातल पर उसकी मनुष्यता भाववादी चेतना से भर जाती है ।

कंगालों की परम निधि थी, औषधि पीड़ितों की,
दीनों की थी बहिन, जननी थी, अनाश्रितों की,
आराध्या की ब्रज अवनि की, प्रेमिका विश्व की थी । §3§

राधा काव्य नारी के प्रेम की चरम सार्थकता का काव्यात्मक उद्घोष नवोत्थानवादी चेतना के धरातल पर हरिऔध ने किया, राधा का नया मिथक भारतीय संस्कृति के आधुनिक आलोक में पुनः जीवित हो उठा ।

---

1. "प्रिय प्रवास" - अयोध्या सिंह "उपाध्याय" हरिऔध -पृ0- 25
2. -वही- पृ0- 23
3. -वही- पृ0- 23

आधुनिक कविता के विकास के लिए धार्मिक रूढ़ियों तथा दरबारी काव्य की रूढ़ियों से संघर्ष आवश्यक था, "महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी पुनर्जागरण " में राम विलास शर्मा ने लिखा है ।"ये रूढ़ियाँ चार थी, पहली रूढ़ि यह कि सरस कविता ब्रजभाषा में ही हो सकती है, और गद्य में जिस भाषा का व्यवहार होता है वह स्वभावत: नीरस है, दूसरी रूढ़ि यह कि श्रृंगार रस सभी रसों में श्रेष्ठ है, और नायिका भेदी साहित्य में इसका पूर्ण विकास हुआ है, तीसरी पीढ़ी समस्या पूर्ति की थी, । चौथी रूढ़ि रस और अलंकारों को लेकर थी, द्विवेदी जी ने इन चारों रूढ़ियों के विरूद्ध जमकर संघर्ष किया । और लगातार 20 वर्षों तक किया, यह संघर्ष कई मोर्चो पर था, एक मोर्चा आलोचना का था । ... दूसरा मोर्चा काव्य रचना का था, जहाँ अपने व्यवहार से उन्हें खड़ी बोली के समर्थकों को सिद्ध करना था । कि खड़ी बोली में मधुर कविता हो सकती है ।" भाषा और मिथकीय संवेदना के स्तर पर "हरिऔध" ने सामंती रूढ़ियों से काफी संघर्ष किया । आज उनका "प्रिय प्रवास" एक सपाट काव्य है, लेकिन किसी जमाने में खड़ी बोली की कविता को मर्यादा दिलाने और आधुनिकता की परम्परा की स्थापना में उसकी प्रमुख भूमिका रही है ।

जहाँ तक साठोत्तरी कविता के पौराणिक सन्दर्भ का प्रश्न है वहाँ सन् 60 के बाद जो कविता लिखी गई, वह दो तरह के कवियों द्वारा लिखी गई, कुछ तो वे कवि जो, पहले से लिखते आ रहे थे, और कुछ तो नई कविता के कवि, और कुछ वे कवि हैं, जिन्होंने सन् साठ के आस-पास लिखना प्रारम्भ कर चुके थे। नई कविता के कवियों में अज्ञेय, नरेश मेहता, कुंवर नारायण, और विजयदेव नारायण साही आदि प्रमुख थे, इनके साथ ही रघुवीर सहाय ने भी नयी शैली में कवितायें लिखी, नई कविता के कवियों ने तथा साठोत्तरी कविता के कुछ कवियों ने पौराणिक ऐतिहासिक तथा मिथकीय सन्दर्भों से जोड़कर छोटी तथा बड़ी कथात्मक कविता की रचना है, चाहे वह हीरानन्द सच्चिदानन्द अज्ञेय की "असाध्यवीणा" हो नरेश मेहता की "संशय की एक रात" अथवा "महाप्रस्थान" तथा कुंवर नारायण की "चक्रव्यूह" जगदीश गुप्त की "शम्बूक" धर्मवीर भारती का "अन्धा युग" सभी कवितायें किसी न किसी रूप में पौराणिक, ऐतिहासिक तथा मिथकीय सन्दर्भों को लेकर लिखी गई है ।

" अज्ञेय ने कल्पना - प्रसूत नये पौराणिक प्रसंग या आख्यान की उद्भावना करने का प्रत्यन्न जिस कविता में किया है, वह लम्बी कथात्मक कविता " आसध्यवीणा " है । उस कविता में वस्तुओं और ध्वनियों तथा सांस्कृतिक शब्दों के सहारे ऐसा वातावरण बनाया गया है, कि कविता किसी. प्राचीन आख्यान की पुनरावृत्ति प्रतीत होती है, पर वह एक अपवाद है, किन्तु "अज्ञेय ने पौराणिक प्रसंगों का उपयोग स्फुट रूप में किया है, या छोटी कविताओं में और कुछ अवसरों पर उन प्रसंगों के उदात्त अर्थ को बदल कर व्यंग्यात्मक बना दिया है।§1§

यदि हम पौराणिक - ऐतिहासिक तथा मिथकीय सन्दर्भ में साठोत्तरी हिन्दी कविता को देखें, तो लगता है, कि सन् साठ के बाद एक बार बड़े जोर - शोर से पौराणिक गाथाओं को मध्य में रखकर कविता की रचना की गई, वैसे मूल स्रोत्र पौराणिक आख्यान ही है जिनके आधार पर कविता में आज इतना परिवर्तन दिखाई पड़ता है ।

पौराणिक गाथा के प्रसंगों का जहाँ तक प्रश्न है, वस्तु स्थिति यह है, कि धूमिल की " मोची राम " कविता या सौमित्र मोहन की लुकमान अली " उनमें पुरावृत्तिकरण है, अधिकांश कवियों ने सामाण्य ढ़ग के अपने चरित्रों का निर्माण पौराणिक प्रकृति की कल्पना के सहारे किया है । इसका परिणाम यह हुआ कि वे चरित्र मिथनुमा हो गये हैं । उनमें निजी वैशिष्ट्य के बदले सर्वनिष्ठ संभावना के विकास पर ध्यान दिया गया है । इससे स्पष्ट हो जाता है, कि सन् 60 के बाद की कविता में पौराणिक उपादान भले ही नगण्य हो, उस कविता की रचना प्रक्रिया कई अवसरों पर पौराणिक प्रतीत होती है । §2§

सामान्य रूप से सन् साठ के बाद की हिन्दी कविता में बनावट का शिल्प भले ही पौराणिक हो, प्राचीन काल के पौराणिक उपादानों का उपयोग उतना नहीं है । कुछ कवियों ने आधुनिक युग की समस्याओं और अपेक्षाओं के संप्रेषण के लिए पौराणिक प्रसंगों में नयी अर्थ भूमि का निर्देश करते हुए उनका उपयोग

---

1. हिन्दी कविता 1960 के बाद " डॉ0 वचन देव कुमार - पृ0 - 44
2. हिन्दी कविता सन् साठ के बाद - डॉ0 वचन देव कुमार - पृ0- 47

......44/-

किया है । " राज कमल चौधरी " ने भी "मुक्ति प्रसंग" जैसी लम्बी कविता में कहीं - कहीं स्फूट रूप में पौराणिक चरित्रों और घटनाओं का उपयोग किया है । "संजय, "मृग मारीच" "उग्रतारा" तथा "शिव" जैसे - पौराणिक चरित्र एवं घटनायें इसका उदाहरण है । "वचन देव कुमार का "ईहामृग" तथा "ओ अजन्मा सुनो" जैसी काव्य - पुस्तकों में संग्रहीत अधिकांश कवितायें पौराणिक सन्दर्भों से ओत - प्रोत है । एक उद्‌रण दृष्टव्य है :-

नहीं मैं कोई कर्ण
जो तुम्हारे अर्जुन ।
हाँ, सव्य साची धनुर्धर अर्जुन को
कर दूं कीर्ति हीन । ⁅1⁆

" एक लव्य की पुकार " कविता की इन पंक्तियों के अतिरिक्त "टाई" कविता की निम्न पंक्तियों को देखा जा सकता है ।

लटक रही अभी - अभी खूँटी पर
बनाकर लम्बा - सा क्रास
कर रही कुछ मंद - मंद स्वर में,
यह उपालम्भ, उपहास सिर्फ मेरा बंधु
विश्व इतिहास के सके साथी हैं इसके
हजरत मुम्हमद था ईसा की सूली की,
याददाश्त हूँ मैं । ⁅2⁆

वचन देव कुमार ने वैदिक, औपनिषदिक, ग्रीक, बाईबल, कुरान, प्रभृत्ति पौराणिक सोत्रों से पुरावृन्तात्मक उपादान लेकर अपनी कविताओं की रचना नयी अर्थ छाया को अधिक सामर्थ्य प्रदान करने के लिए की है ।

धूमिल ने यधपि मिथकीय बिम्बों का प्रयोग बहुत कम किया है, फिर भी " स्वास्तिक चिन्ह ", "नरभक्षी जीभ" तथा "ईसा मसीह" जैसे - अल्प प्रयोग उनकी कविताओं में देखने को मिलते हैं । विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की वर्ष - 1985 में प्रकाशित कविता "टल गया एक महा भारत" इस बात का सबूत है, कि आज का कवि अपनी रचनात्मक उर्जा को प्राप्त करने के लिए मिथक और यथार्थ के अन्योन्य स्थान्तरण को स्वीकार करता है ।

---

1. "ओ अजन्मा सुनो" - डॉ० वचन देव कुमार - पृ०- 7
2. " ईहा मृग " - पृ०- 28

तिवारी की पूरी कविता का अंश दृष्टव्य है ।

> गुरू ने कटवा लिया शिष्य का अगूँठा,
> भाई ने भाई को निष्कासित कर दिया
> एक असहाय नारी नंगी कर दी गई,
> महारथियों के बीच
> नहीं उठाया, अर्जुन ने गाण्डीव
> नहीं दिया कृष्ण ने युद्ध मंत्र
> एक महाभारत टल गया
> टल गया एक महाभारत । (1)

आज के संघर्षशील जीवन में, मूल्यों के टकराव में, व्यक्ति की अस्मिता और शंसित मन की टकराहट में तथा जीवन की विडम्बनाओं में हमारे ये मिथक आज भी अपनी लोचन शक्ति का परिचय देते हुए काल के प्रवाह में जीवित एवं गतिशील है । इस समग्र परशीलन से स्पष्ट होता है कि साठोत्तरी कविता चिन्तन में एक वैचारिक बदलाव मिथक कविता में प्रस्तुत हुआ है, जो अपेक्षाकृत कहीं अधिक सोद्देश्य एवं सामयिक सन्दर्भों से जुड़ा हुआ है । आधुनिक काल के पूर्वांचल की मिथक कविता अपने मूल कथ्य में जहाँ पौराणिक सन्दर्भों का प्राधान्य रखती है और सांकेतिक अर्थवत्ता को गौण रूप प्रदान करती है, वहाँ साठोत्तरी मिथक कविता का मूल कथ्य सामयिक सन्दर्भों से जुड़ा हुआ है, तथा उसके पौराणिक सन्दर्भ अपनी गौड़ भूमिका में कथा को वजन देने के लिए ही सन्दर्भित हुए हैं ।

कहीं - कहीं तो साठोत्तरी कवियों ने कविता को मिथक रूप प्रदान करने के लिए पौराणिक सन्दर्भों को स्पर्श ही किया है । जब कि उनका मूल कथ्योउद्देश्य आधुनिक युग की विवेच्य समस्याओं को सामने लाना था । धूमिल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जगदीश गुप्त नरेश मेहता आदि की काव्य रचनाओं में यह तथ्य देखा जा सकता है ।

अगले अध्याय में बिम्ब प्रतीक एवं मिथक संयोजन की अभियोजना के परिप्रेक्ष्य में विचार किया जा रहा है ।

---

1. बेहतर दुनियाँ के लिए - पृ0- 38 - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

ळळळळळळ